कक्षा 12

अर्थशास्त्र
अनुपूरक पाठ्यसामग्री

भाग ख : समष्टि अर्थशास्त्र - एक परिचय

(मार्च 2010 की परीक्षा के लिए)

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली

प्रीत विहार, दिल्ली - 110092

भाग 2 : प्रारम्भिक समष्टि अर्थशास्त्र

इकाई - 6

राष्ट्रीय आय और संबंधित समुच्चय

आर्थिक (देशीय) सीमा की संकल्पना

राष्ट्रीय आय लेखांकन समष्टि अर्थशास्त्र की एक शाखा है और राष्ट्रीय आय तथा संबंधित समुच्चयों का आंकलन इसका एक भाग है। राष्ट्रीय आय और इससे संबंधित कोई भी समुच्चय एक देश की उत्पादन क्रियाओं का माप है। ये आर्थिक क्रियाएँ कहाँ और किसके द्वारा की जाती हैं? क्या इन आर्थिक क्रियाओं से तात्पर्य देश की सीमा में होने वाली आर्थिक क्रियाओं से है या देश की सीमा में रहने वालों द्वारा की गई आर्थिक क्रियाओं से है? ये कुछ मूल प्रश्न हैं। वास्तव में आर्थिक क्रियाओं से तात्पर्य इन दोनों से है। यहाँ एक और प्रश्न उठता है! देश की सीमा से हमारा तात्पर्य क्या राजनीतिक सीमा है? इन सभी प्रश्नों का उत्तर पाने के लिए हमें दो संकल्पनाओं का अर्थ जानना होगा: (i) आर्थिक (देशीय) सीमा और (ii) देश के निवासी। राष्ट्रीय आय लेखांकन के संदर्भ में इनके विशेष अर्थ हैं।

आर्थिक सीमा की परिभाषा:

संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार **: आर्थिक सीमा एक देश की सरकार द्वारा प्रशासित वह भौगोलिक सीमा है जिसमें व्यक्तियों, वस्तुओं और पूँजी का निर्बाध संचालन होता है।** इस परिभाषा का आधार व्यक्तियों, वस्तुओं और पूँजी के संचलन की स्वतंत्रता है। एक देश की राजनीतिक सीमा के वह क्षेत्र जहाँ सरकार को यह स्वतंत्रता नहीं है उस देश की आर्थिक सीमा में नहीं आएँगें। इसका एक उदाहरण दूतावास हैं। भारत में विदेशी दूतावासों पर सरकार को यह स्वतंत्रता नहीं है। अत: ये दूतावास भारत की आर्थिक सीमा का भाग नहीं माने जाते। प्रत्येक देश के दूतावास को उस देश की आर्थिक सीमा का भाग माना जाता है। उदाहरण के लिये भारत में अमरीका का दूतावास अमरीका की आर्थिक सीमा का हिस्सा है। इसी प्रकार अमरीका में भारतीय दूतावास भारत की आर्थिक सीमा का एक हिस्सा है।

आर्थिक सीमा का क्षेत्र

एक देश की आर्थिक सीमा में निम्नलिखित शामिल किए जाते हैं :-

(i) देश की राजनीतिक सीमा (समुद्री सीमा और आकाशी क्षेत्र सहित)

(ii) देश के विदेशों में दूतावास, वाणिज्य दूतावास तथा सैनिक प्रतिष्ठान

(iii) देश के निवासियों द्वारा दो या दो से अधिक देशों के मध्य चलाए जाने वाले जलयान व वायुयान।

(iv) मछली पकड़ने की नौकाएँ, तेल व प्राकृतिक गैस यान जो अन्तर्राष्ट्रीय जलसीमाओं में या उन क्षेत्रों में चलाए जाते हैं जिन पर देश का अनन्य अधिकार है।

राष्ट्रीय आय समुच्चयों की दो श्रेणियाँ होती हैं : देशीय और राष्ट्रीय यानि देशीय उत्पाद और राष्ट्रीय उत्पाद। एक **देश की आर्थिक सीमा में स्थित उत्पादन इकाईयों द्वारा किया गया उत्पादन देशीय उत्पाद कहलाता है।**

<u>निवासी की संकल्पना</u>

नागरिक और निवासी दो भिन्न शब्द हैं। इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि एक व्यक्ति एक ही देश का निवासी व नागरिक दोनों नहीं हो सकता। इसका यह अर्थ भी नहीं है कि एक देश का निवासी उस देश का नागरिक भी होगा या एक देश का नागरिक उसी देश का निवासी भी होगा। एक व्यक्ति एक देश का नागरिक हो सकता है और किसी अन्य देश का निवासी। जो भारतीय विदेशों में रहते हैं वे भारत के नागरिक है और जिस देश में रहते हैं उसके निवासी हैं।

<u>निवासी की परिभाषा</u>

एक व्यक्ति, या एक संस्था, उस देश का निवासी कहलाता है जिस देश में रहता है, या स्थित है, व उसी की आर्थिक सीमा में उसके आर्थिक हित का केन्द्र है।

'आर्थिक हितों का केन्द्र' में दो बातें शामिल होती हैं :- (i) वह निवासी (व्यक्ति या संस्था) उस देश की आर्थिक सीमा में रहता है (या स्थित है) और (ii) उसकी कमाने, खर्च करने और संचय करने की आर्थिक क्रियाएँ वही से होती हैं।

एक देश के निवासियों द्वारा किया गया उत्पादन राष्ट्रीय उत्पाद कहलाता है। यह उत्पादन चाहे उस देश की आर्थिक सीमा में किया गया हो या उससे बाहर।

इसकी तुलना में, उन सभी उत्पादन इकाईयों द्वारा किया गया उत्पादन जो एक देश की आर्थिक सीमा में स्थित है, देशीय उत्पाद कहलाता है, चाहे यह उत्पादन निवासियों द्वारा किया गया हो या गैर-निवासियों द्वारा किया गया हो।

<u>राष्ट्रीय उत्पाद और देशीय उत्पाद में संबंध</u>

किसी देश की आर्थिक सीमा में किया गया कुल उत्पादन 'घरेलू उत्पाद' होता है। किसी देश के निवासियों द्वारा किया गया कुल उत्पादन 'राष्ट्रीय उत्पाद' होता है। सामान्यतया पहले घरेलू उत्पाद का आंकलन किया जाता है फिर इसमें कुछ समायोजन करके राष्ट्रीय उत्पाद का आंकलन किया जाता है। आइए, देखें ये समायोजन क्या हैं?

राष्ट्रीय उत्पाद = देशीय उत्पाद
+ देश के निवासियों द्वारा आर्थिक सीमा से बाहर किया गया उत्पादन
– देश की आर्थिक सीमा में गैर-निवासियों द्वारा किया गया उत्पादन

देश के निवासियों द्वारा आर्थिक सीमा से बाहर किए गए उत्पादन में योगदान को 'विदेशों से प्राप्त कारक आय' कहते हैं। देश की आर्थिक सीमा में गैर-निवासियों द्वारा किए गए उत्पादन में योगदान को 'विदेशों को दी गई कारक आय' कहते हैं। अत:

राष्ट्रीय उत्पाद = देशीय उत्पाद
+ विदेशों से प्राप्त कारक आय
– विदेशों को दी गई कारक आय

विदेशों से प्राप्त कारक आय और विदेशों को दी गई कारक आय के अन्तर को 'विदेशों से निबल कारक आय' कहते हैं। अत: राष्ट्रीय उत्पाद = देशीय उत्पाद + विदेशों से निबल कारक आय।

यदि विदेशों से प्राप्त कारक आय, विदेशों को दी गई कारक आय से अधिक होती है तो विदेशों से निबल कारक आय घनात्मक होगी। यदि विदेशों से प्राप्त कारक आय, विदेशों को दी गई कारक आय से कम होती है तो विदेशों से निबल कारक आय ऋणात्मक होगी।

औद्योगिक वर्गीकरण

परिचय

उत्पादन इकाईयों का अलग-अलग औद्योगिक समूहों या क्षेत्रकों में समूहीकरण औद्योगिक वर्गीकरण कहलाता है। राष्ट्रीय आय के आंकलन में सबसे पहले यही कार्य करना होता है। एक ही प्रकार की उत्पादन इकाईयों के समूह के राष्ट्रीय आय में योगदान का आंकलन करना प्रत्येक उत्पादन इकाई के अलग-अलग योगदान के आंकलन करने की तुलना में सरल होता है। एक देश की आर्थिक सीमा की सभी उत्पादन इकाईयों का तीन समूहों में समूहीकरण करना एक सामान्य प्रथा है। ये तीन समूह प्राथमिक क्षेत्रक, द्वितीयक क्षेत्रक और तृतीयक क्षेत्रक हैं।

प्राथमिक क्षेत्रक

इस क्षेत्रक में उन उत्पादन इकाईयों को शामिल किया जाता है जो प्राकृतिक संसाधनों के दोहन से उत्पादन करती हैं जैसे कृषि, पशुपालन, मछली पकड़ना, खनिज़ निकालना, वानिकी आदि। इनसे द्वितीयक क्षेत्रक के लिए कच्चा माल मिलता है।

द्वितीयक क्षेत्रक

इस क्षेत्रक में वे उत्पादन इकाईयाँ शामिल की जाती हैं जो एक प्रकार की वस्तु को दूसरे प्रकार की वस्तु में परिवर्तित करती हैं। कारखाने, निर्माण, बिजली उत्पादन, जल आपूर्ति आदि इसके कुछ उदाहरण हैं।

तृतीयक क्षेत्रक

इसे सेवा क्षेत्रक भी कहते हैं। इसके अन्तर्गत सेवाएँ उत्पादन करने वाली उत्पादन इकाईयाँ आती हैं। परिवहन, व्यापार, शिक्षा, होटल, सरकारी प्रशासन, वित्त आदि इसके कुछ उदाहरण हैं।

राष्ट्रीय आय संबंधी समुच्चय

राष्ट्रीय आय लेखांकन में राष्ट्रीय आय संबंधी बहुत से समुच्चय होते हैं। इनके अध्ययन को सरल बनाने हेतु हम इन्हें तीन समूहों में बाँट लेते हैं :

1. देशीय व राष्ट्रीय

2. सकल व निबल

3. कारक लागत पर आंकलित और बाजार कीमत पर आंकलित

1. **<u>देशीय व राष्ट्रीय</u>** : इनके बारे में पहले विस्तार से बताया जा चुका है। ये दोनों समुच्चय सकल व निबल रूप में हो सकते हैं।

2. **<u>सकल व निबल</u>** : उत्पादन करने के लिये मशीनों आदि का प्रयोग किया जाता है। उत्पादन प्रक्रिया में मशीनों आदि की घिसावट होती है जिसे 'स्थिर पूँजी का उपभोग' या 'मूल्यह्रास' कहते हैं। उत्पादन इकाईयों को इस मूल्यह्रास के लिये प्रावधान करना होता है। यदि यह प्रावधान न किया जाए तो राष्ट्रीय आय के विभिन्न समुच्चय सकल रूप में होंगे जैसे सकल घरेलू उत्पादन और सकल राष्ट्रीय उत्पाद। यदि उत्पादन इकाईयाँ मूल्य ह्रास का प्रावधान करती हैं तो यह समुच्चय निबल कहलाते हैं जैसे निबल देशीय उत्पाद व निबल राष्ट्रीय उत्पाद। अत:

निबल देशीय उत्पाद = सकल देशीय उत्पाद – मूल्य ह्रास

निबल राष्ट्रीय उत्पाद = सकल राष्ट्रीय उत्पाद – मूल्य ह्रास

3. **<u>बाजार कीमत पर आंकलन और साधन लागत पर आंकलन</u>** : यदि देशीय उत्पाद के मूल्य का आंकलन बाजार कीमत पर किया जाता है तो इसे बाजार कीमत पर देशीय उत्पाद कहते हैं। बाजार कीमत वह कीमत है जिस पर क्रेता वस्तुएँ व सेवाएँ खरीदते हैं। इस कीमत में वस्तुओं पर लगे कर शामिल होते हैं। ये कर सरकार को हस्तांतरित कर दिये जाते हैं। इनका उत्पादन प्रक्रिया से संबंध नहीं है। यदि बाजार मूल्य पर आंकलित देशीय उत्पाद में से ये कर घटा दें तो साधन लागत पर देशीय उत्पाद निकल आएगा। इसी प्रकार सरकार कुछ वस्तुओं पर सरकारी सहायता देती है ताकि उत्पादक इन्हें कम कीमत पर उपभोक्ताओं को बेच सकें। इस प्रकार प्राप्त सहायता उत्पादकों को उत्पादन प्रक्रिया से नहीं मिली। ये उसे उपभोक्ताओं को हस्तांतरित कर देते हैं, वस्तु का बाजार मूल्य कम करके। सरकारी सहायता से वस्तुओं का बाजार मूल्य उनके उत्पादन मूल्य से कम हो जाता है। अत: साधन लागत पर देशीय उत्पाद ज्ञात करने के लिये बाजार मूल्य पर आंकलित देशीय उत्पाद में सरकारी (आर्थिक) सहायता जोड़ देते हैं। अत:

साधन लागत पर देशीय उत्पाद = बाजार मूल्य पर देशीय उत्पाद
– अप्रत्यक्ष कर
+ सरकारी सहायता (आर्थिक सहायता)

अप्रत्यक्ष कर और सरकारी सहायता के अन्तर को निबल अप्रत्यक्ष कर कहते हैं।

निबल अप्रत्यक्ष कर = अप्रत्यक्ष कर – सरकारी सहायता

उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि यदि हमें किसी एक प्रकार का राष्ट्रीय आय समुच्चय ज्ञात है तो अन्य प्रकार के समुच्चय ज्ञात किए जा सकते हैं। साधन लागत पर राष्ट्रीय उत्पाद को राष्ट्रीय आय कहते हैं।

राष्ट्रीय आय = बाजार मूल्य पर सकल देशीय उत्पाद

– मूल्यह्रास

– निबल अप्रत्यक्ष कर

+ विदेशों से निबल कारक आय

राष्ट्रीय आय और उससे संबंधित समुच्चयों के आंकलन की विधियाँ

राष्ट्रीय आय के चक्रीय प्रवाह से हमें इसके आंकलन की तीन विधियाँ मिलती हैं : उत्पादन (मूल्य संवृद्धि) विधि, आय विधि और व्यय विधि। आइए यह जाने की प्रत्येक विधि से हमें राष्ट्रीय आय के कौन से समुच्चय प्राप्त होते हैं।

(1) उत्पादन (मूल्य संवृद्धि) विधि

इसके अन्तर्गत पहले हम प्रत्येक क्षेत्रक में बाजार कीमत पर सकल मूल्य संवृद्धि ज्ञात करते हैं और सभी क्षेत्रकों की इस मूल्य संवृद्धि का योग करने से हमें बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद ज्ञात हो जाता है। इसमें नीचे दिए गए समायोजन करके राष्ट्रीय आय ज्ञात हो जाती है :

बाजार कीमत पर सकल देशीय उत्पाद

– स्थिर पूँजी का उपभोग

बाजार कीमत पर निबल देशीय उत्पाद

– निबल अप्रत्यक्ष कर

साधन लागत पर निबल देशीय उत्पाद

+ विदेशों से निबल कारक आय

= साधन लागत पर निबल राष्ट्रीय उत्पाद

= राष्ट्रीय आय

(2) आय विधि

इस विधि के अन्तर्गत पहले क्षेत्रक द्वारा किए गए कुल कारक भुगतान का आंकलन करते है। फिर तीनों क्षेत्रकों के कारक भुगतानों का योग करने से हमें 'साधन लागत पर निबल मूल्य वृद्धि' (देशीय उत्पाद) या देशीय कारक आय ज्ञात हो जाती है। फिर इसमें नीचे दिखाए गए समायोजन करके राष्ट्रीय आय ज्ञात की जाती है।

साधन लागत पर निबल मूल्य वृद्धि (देशीय कारक आय)

+ विदेशों से निबल कारक आय

= राष्ट्रीय आय

देशीय कारक आय (कारक भुगतान) के निम्नलिखित घटक होते हैं:

1. कर्मचारियों का पारिश्रमिक

2. किराया और रायल्टी

3. ब्याज

4. लाभ

इन घटकों के बारे में कुछ जानकारी आवश्यक है :

कर्मचारियों का पारिश्रमिक : इसके अन्तर्गत उत्पादकों द्वारा अपने कर्मचारियों को दी गई मजदूरी व वेतन नकद रूप में या किस्म के रूप में जैसे कि मुफ्त आवास आदि और उनके द्वारा कर्मचारियों की सामाजिक सुरक्षा योजना में अंशदान शामिल किए जाते हैं।

किराया : किराए से अभिप्राय भूमि प्रयोग करने के बदले में किरायेदार द्वारा भूमि के मालिक को किया गया भुगतान है। भूमि के अन्दर से खनिज आदि निकालने हेतु पट्टे पर भूमि लिए जाने के बदले में किया गया भुगतान 'रायल्टी' है।

ब्याज : वित्तीय परिसम्पत्ति के मालिकों को उत्पादकों द्वारा उस परिसम्पत्ति का प्रयोग करने के लिये किया गया भुगतान ब्याज होता है।

लाभ : उत्पादन इकाई के स्वामी को अन्य कारकों का भुगतान करने के बाद जो बचता है वह लाभ कहलाता है। उत्पादन इकाईयाँ इसका प्रयोग निगम कर देने में, लाभांश देने में और अवितरित लाभ के रूप में करती हैं।

विभिन्न कारकों को किए गए भुगतान की जानकारी उत्पादन इकाईयों के खातों से मिलती है। कुछ उत्पादन इकाईयाँ ऐसे होती हैं जिनके खातों से कारकों को किया गया कुल भुगतान तो ज्ञात हो जाता है लेकिन इसके प्रत्येक घटक (प्रत्येक कारक को किया गया भुगतान) को किए गए भुगतान के बारे में जानकारी नहीं मिलती। स्व: नियोजित व्यक्ति जैसे कि डाक्टर, वकील, छोटे दुकानदार आदि ऐसी उत्पादन इकाईयों के उदाहरण हैं। इनके द्वारा कारकों के कुल भुगतान को एक अलग श्रेणी में डाला जाता है जिसे 'मिश्रित आय' का नाम दिया जाता है। मिश्रित आय से तात्पर्य है सारे कारकों की इकट्ठी आय। अत:

साधन लागत पर निबल देशीय उत्पाद = कर्मचारियों का पारिश्रमिक
+ किराया व रायल्टी
+ ब्याज
+ लाभ
+ मिश्रित आय (यदि हो)

राष्ट्रीय आय लेखांकन में कारकों को किए गये भुगतान के संबंध में एक और संकल्पना का प्रयोग किया जाता है जिसे **प्रचालन अधिशेष** कहते हैं। यह लाभ, ब्याज, लगान और रायल्टी का योग है। अत:

साधन लागत पर निबल देशीय उत्पाद = कर्मचारियों का पारिश्रमिक

\+ प्रचालन अधिशेष

\+ मिश्रित आय (यदि हो)

(3) व्यय विधि

इस विधि के अन्तर्गत हम उपभोग और निवेश पर किए गए व्यय को जोड़ लेते हैं। यह व्यय देशीय उत्पाद पर किया गया व्यय होता है। इसके विभिन्न घटक हैं :

(i) निजी अन्तिम उपभोग व्यय

(ii) सरकारी अन्तिम उपभोग व्यय

(iii) सकल देशीय पूँजी निर्माण

(iv) निबल निर्यात (निर्यात–आयात)

इन मदों के योग से हमें बाजार कीमत पर सकल देशीय उत्पाद ज्ञात होता है। इसमें निम्नलिखित समायोजन से राष्ट्रीय आय ज्ञात हो जाती है।

बाजार कीमत पर सकल देशीय उत्पाद

– स्थिर पूँजी का उपभोग

= बाजार कीमत पर निबल देशीय उत्पाद

– निबल अप्रत्यक्ष कर

= साधन लागत पर निबल देशीय उत्पाद

\+ विदेशों से निबल कारक आय

= साधन लागत निबल राष्ट्रीय उत्पाद

= राष्ट्रीय आय

सकल देशीय पूँजी निर्माण में निम्नलिखित मदें शामिल की जाती हैं :

(i) निबल देशीय स्थिर पूँजी निर्माण

(ii) स्टॉक में परिवर्तन (अन्तिम स्टॉक - प्रारम्भिक स्टॉक)

(iii) स्थिर पूँजी का उपभोग

राष्ट्रीय आय के आंकलन में बरती जाने वाली सावधानियाँ

राष्ट्रीय आय के आंकलन में बहुत सी संकलपनात्मक व सांख्यिकि समस्याएँ आती हैं। इसके कारण

होने वाली गलतियों को न्यूनतम करने के लिये पहले से ही कुछ सावधानियाँ बरतनी आवश्यक हैं।

I. मूल्य संवृद्धि (उत्पादन) विधि का प्रयोग करते समय बरती जाने वाली सावधानियाँ

(i) दोहरी गणना से बचे

मूल्य संवृद्धि ज्ञात करने के लिए उत्पादन के मूल्य में से मध्यवर्त्ती लागत घटा देते हैं। यदि हम सभी उत्पादन इकाईयों के उत्पादन के मूल्य को जोड़ेंगे तो एक उत्पादन द्वारा किया गया उत्पादन एक से अधिक बार जुड़ जाएगा। इससे राष्ट्रीय आय का आंकलन वास्तविकता से अधिक हो जाएगा। इस समस्या से निदान पाने के दो तरीके हैं : (अ) प्रत्येक उत्पादन इकाई द्वारा की गई मूल्य संवृद्धि ही जोड़ें या (ब) केवल अन्तिम उत्पादों के मूल्य की गणना करें।

(ii) पुराने माल की बिक्री को शामिल न करें

किसी भी वस्तु का जब उत्पादन होता है तो उसे उसी वर्ष की राष्ट्रीय आय की गणना में शामिल कर लिया जाता है। प्रयोग करने के बाद उसे बेचना अर्थात् दोबारा बेचना उत्पादन क्रिया नहीं है। लेकिन यदि पुराने माल को किसी के द्वारा बेचा गया है और उसे इस सेवा के लिये कमीशन आदि दिया गया है तो यह कमीशन एक सेवा का मूल्य है और इसे राष्ट्रीय आय में शामिल किया जाएगा।

(iii) स्वःउपभोग उत्पादन को शामिल करना चाहिए

उत्पादन का वह भाग जो बेचा नहीं बल्कि स्वः उपभोग के लिये रख लिया उसे राष्ट्रीय आय का आंकलन करते समय शामिल करना चाहिए। खुद काबिज मकानों को आरोपित (estimated)किराया, किसानों द्वारा स्वयं उपभोग के लिए रखी फसल का हिस्सा आदि इसके कुछ उदाहरण हैं।

II. आय विधि का प्रयोग करते समय बरती जाने वाली मुख्य सावधानियाँ

(i) हस्तांतरण भुगतान या आय को शामिल न करें

राष्ट्रीय आय में कारकों के स्वामियों को उनके द्वारा उत्पादन में प्रदान की गई सेवाओं के बदले में किए गए भुगतान (जिन्हें कारक आय कहते हैं) ही शामिल किए जाते हैं। ऐसा कोई भुगतान जो किसी उत्पादन सेवा के लिए नहीं किया गया हो, हस्तांतरण कहलाता है। उपहार, दान आदि इसके कुछ उदाहरण हैं।

(ii) पूँजीगत लाभ को शामिल न करें

पुरानी वस्तुओं और वित्तीय परिसम्पत्तियों (शेयर आदि) को बेचने से होने वाली लाभ पूँजीगत लाभ कहलाता है। इस प्रकार की आय कारक आय नहीं हैं।

(iii) खुद-काबिज (self - occupied) मकानों का किराया शामिल करें

जब मकान मालिक अपने मकान में रहता है तो वास्तव में वह स्वयं को ही किराया देता है और यह एक सेवा के लिए भुगतान है। इसलिए इसे कारक भुगतान माना जाएगा।

(iv) उत्पादन इकाईयों के स्वामियों द्वारा प्रदान की गई नि:शुल्क सेवाएँ भी शामिल करें

इसके मुख्य उदाहरण हैं स्वयं ही उत्पादन इकाई के लिये वित्त प्रदान करना, भवन प्रदान करना, स्वयं की सेवाएँ प्रदान करना। इन सब सेवाओं के आरोपित मूल्यों को कारक आय में शामिल करना चाहिए।

III. व्यय विधि का प्रयोग करते समय बरती जाने वाली मुख्य सावधानियाँ

(i) मध्यवर्त्ती वस्तुओं पर व्यय को शामिल न करें

इस विधि के द्वारा राष्ट्रीय आय का आंकलन करने के लिए केवल उपभोग व निवेश पर किए गए व्यय का योग किया जाता। इसे अन्तिम व्यय भी कहते हैं। मध्यवर्त्ती वस्तुओं पर व्यय को शामिल करने से दोहरी गणना हो जाएगी। कच्चे माल पर व्यय इसका एक उदाहरण हैं।

(ii) पुरानी वस्तुओं और वित्तीय परिसम्पत्ति के क्रय पर व्यय शामिल न करें

पुरानी वस्तुएँ भूतकाल में किया गया उत्पादन है और वित्तीय सम्पत्तियाँ ना तो वस्तुएँ हैं और न ही सेवाएँ। अत: इन पर किए गए व्यय को शामिल नहीं करना चाहिए।

(iii) स्वयं उत्पादित अन्तिम उत्पादों के स्वयं उपभोग को शामिल करना चाहिए

अपने स्वयं के मकान में रहने पर यह मान लिया जाता है कि मालिक स्वयं को ही किराया दे रहा है।

(iv) हस्तांतरण भुगतान को शामिल न करें

उपहार, दान आदि पर किया गया व्यय किसी वस्तु या सेवा के बदले नहीं है। ये हस्तांतरण व्यय है।

प्रयोज्य आय

परिचय

उपभोग व्यय और बचत के लिए उपलब्ध आय को प्रयोज्य आय कहते हैं। इसमें कारक आय और हस्तांतरण (गैर कारक आय) दोनों शामिल होती है। राष्ट्रीय आय में केवल कारक आय शामिल की जाती है। यदि राष्ट्रीय आय ज्ञात हो तो प्रयोज्य आय ज्ञात की जा सकती है।

राष्ट्रीय प्रयोज्य आय

राष्ट्रीय प्रयोज्य आय से संबंधित दो समुच्चय होते है (i) सकल राष्ट्रीय प्रयोज्य आय और (ii) निबल राष्ट्रीय प्रयोज्य आय

सकल राष्ट्रीय प्रयोज्य आय = राष्ट्रीय आय
+ निबल अप्रत्यक्ष कर
+ मूल्य ह्रास
+ विदेशों से निबल चालू हस्तांतरण

अथवा

सकल राष्ट्रीय प्रयोज्य आय = बाजार कीमत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद
+ विदेशों से निबल चालू हस्तांतरण

निबल राष्ट्रीय प्रयोज्य आय = सकल राष्ट्रीय प्रयोज्य आय
– मूल्य ह्रास

निजी क्षेत्र की प्रयोज्य आय संबंधी समुच्चय

राष्ट्रीय आय सम्बन्धी समुच्चयों से वैयक्तिक प्रयोज्य आय निकालने के लिए निम्नलिखित समायोजन करने होते हैं।

सबसे पहले हम निजी क्षेत्र को देशीय उत्पाद से अर्जित आय का आंकलन करते हैं :

निजी क्षेत्र को देशीय उत्पाद से अर्जित आय = साधन लागत पर निबल देशीय उत्पाद
– सरकार को सम्पत्ति व उद्यमवृति से प्राप्त आय
– गैर-विभागीय उद्यमों की बचत

निजी क्षेत्र को देशीय उत्पाद से अर्जित आय से निजी आय का आंकलन किया जाता है।

निजी आय = निजी क्षेत्र को देशीय उत्पाद से अर्जित आय
+ राष्ट्रीय ऋण पर ब्याज
+ विदेशों से निबल कारक आय
+ सरकार से चालू हस्तांतरण
+ शेष विश्व से निबल चालू हस्तांतरण

निजी आय से वैयक्तिक आय निकाली जाती है :

वैयक्तिक आय = निजी आय
– निजी उद्यमों की बचतें (विदेशी कम्पनियों की निबल प्रतिधारित आय को निकालकर)
– निगम कर

वैयक्तिक आय से वैयक्तिक प्रयोज्य आय निकाली जाती है :

वैयक्तिक प्रयोज्य आय	=	वैयक्तिक आय
	–	परिवारों द्वारा दिये गए प्रत्यक्ष कर
	–	सरकारी प्रशासनिक विभागों को विविध प्राप्तियाँ

ऊपर दिखाए गए समायोजनों में कुछ मदों के बारे में अधिक जानकारी आवश्यक है। **'राष्ट्रीय ऋण पर ब्याज'** उस ऋण पर दिया गया ब्याज है जो सरकार ने अपने प्रशासनिक व्यय को पूरा करने के लिए लिया था। यह प्राप्तकर्त्ताओं की कारक आय नहीं है इसलिए इसे देशीय उत्पाद में शामिल नहीं किया गया था लेकिन यह प्रयोज्य आय का एक भाग तो है इसलिए इसे जोड़ा गया।

इकाई 7

वाणिज्य बैंको द्वारा मुद्रा का निर्माण

अर्थ : सौदों के लिए अर्थात लेन देन में प्रयोग की जाने वाली वस्तु मुद्रा होती है। अर्थव्यवस्था में मुद्रा के स्टाक को मुद्रा पूर्ति कहते हैं। मुद्रा की पूर्ति के दो घटक हैं

(1) जनता के पास मुद्रा और वाणिज्य बैंकों की माँग जमाएँ। मुद्रा का निर्गमन केन्द्रीय बैंक (भारत में रिजर्व बैंक) करता है।

(2) माँग जमाओं का निर्माण वाणिज्य बैंक करते हैं और इसे बैंक मुद्रा कहते हैं।

बैंको को जनता से जमाएँ प्राप्त होती हैं। जमाकर्ता जब चाहें अपनी जमाओं का एक भाग या सारी जमाएँ जब चाहें चैक द्वारा बैंक से निकाल सकते हैं। बैंक इन जमाओं का उपयोग ऋण देकर करते हैं। यही बैंकों द्वारा जमा निर्माण करने का आधार है। कितनी जमाओं का निर्माण किया जा सकता है यह दो बातों पर निर्भर करता है। (1) जनता द्वारा की गई प्रारम्भिक जमाएँ और वैद्यानिक कोष अनुपात (Legal Reserve Ratio)! जमाओं के निर्माण को ही मुद्रा का निर्माण या साख का निर्माण कहते हैं।

मुद्रा निर्माण की प्रक्रिया

अर्थ : मान लीजिए, पूरी वाणिज्य बैंकिग व्यवस्था एक ही इकाई है। यह भी मान लीजिए कि अर्थव्यवस्था में सारे लेन-देन बैंक के जरिए होते हैं। भुगतान चैक द्वारा किए जाते हैं और प्राप्तियाँ बैंक में जमा कर दी जाती हैं।

मान लीजिए शुरू में बैंक में 100 रू. जमा किए गए। बैंक इसका उपयोग उधार देकर करता है। लेकिन बैंक इस पूरी राशि का उधार नही दे सकता। बैंक के लिए अपनी जमाओं का एक निश्चित भाग नकद रूप में रखना कानूनी रूप से अनिवार्य है। यह भाग **वैधानिक कोष अनुपात** (Legal Reserve Ratio (LRR)) कहलाता है। यह अनुपात केन्द्रीय बैंक निश्चित करता है। इसका एक भाग केन्द्रीय बैंक के पास रखना पड़ता है जिसे **नकद कोष अनुपात** (Cash Reserve Ratio)कहते हैं और दूसरा भाग जिसे संवैधानिक तरलता अनुपात (Statutary Liquidity Ratio) कहते हैं, बैंक स्वयं रखता है।

बैंक जमाओं का एक अनुपात कोष के रूप में क्यों रखता है? समय समय पर जमाकर्ता अपनी जमाएँ निकालते रहते हैं। जमाओं का केवल एक अनुपात ही नकद रूप में रखने के दो कारण हैं:

(1) अनुभव के आधार पर बैंकों को ये पता है कि सभी जमाकर्ता एक ही समय में अपनी सारी जमाएँ नही निकालते और वे अपनी जमाओं का केवल एक भाग ही निकालते हैं।

(2) बैंको के पास निरन्तर नई जमाएँ आती रहती हैं। अतः लोगों द्वारा प्रतिदिन जमाएँ निकालने के लिए कुल जमाओं का एक भाग ही नकद कोष के रूप में रखना पर्याप्त है।

बैंक जमाओं का निर्माण कैसे करता है? अब इस प्रक्रिया को समझते हैं। मान लीजिए बैंक के पास शुरू में 100 रु० जमा किए जाते हैं। बैंक 100 रु० की जमाओं में से 80 रु० का उधार दे सकता है। बैंक उधार कैसे देता है? ऋण लेने वालों के जमा खाते खोल दिए जाते हैं जिनमें से वे 80 रु० तक निकाल सकते हैं। मान लीजिए वे 80 रु० का भुगतान किसी को कर देते हैं।

हमने यह मान्यता की है कि सभी लेन देन बैंको के माध्यम से होते है। ऋण लेने वाले ने 80 रु० जिसे दिये वह यह राशि बैंक मे अपने खाते में जमा कर देता है। इस प्रकार बैंक की माँग जमाएं 80 रु० बढ़ गई। अब कुल जमाएँ (100+80) 180 हो गईं। 80 रु० की नई जमाओं में से बैंक 20 प्रतिशत नकद रखकर बाकि राशि (64 रु०) उधार दे देता है। ऊपर बताई गई प्रक्रिया फिर दोहराई जाती है। ऋण लेने वाला जिसे 64 रु० देता है वह इसे बैंक में जमा कर देता है। अत: बैंक जमाएं 64 रु० बढ़ गई। अब कुल जमाएं (100+80+64) 244 रु० हो गई।

जमा निर्माण की यह प्रक्रिया चलती रहती है। हर दौर के बाद कुल जमाएं बढ़ जाती है। इसके साथ साथ नकद कोष भी बढ़ता जाता है। जमा निर्माण की यह प्रक्रिया तब समाप्त होती है जब कुल नकद कोष शुरू के जमा (100 रु०) के बराबर हो जाता है। इस स्थिति में कुल जमाएं 500 रु० होगी जो शुरू की 100 रु० की जमाओं का 5 गुणा है। नीचे दी गई तालिका से यह और अधिक स्पष्ट हो जाता है।

वाणिज्य बैंक द्वारा जमा निर्माण

	जमाएं रु०	**ऋण रु०**	**नकद कोष रु०**
प्रारंभिक	100	80	20
पहला दौर	80	64	16
दूसरा दौर	64	51.20	12.80
.	.	.	.
.	.	.	.
.	.	.	.
.	.	.	.
कुल	**500**	**400**	**100**

मद्रा गुणक

कुल जमाएँ शुरू की जमाओं का कितने गुणा होंगी, यह वैधानिक कोष अनुपात (LRR)से निर्धारित होता है।

$$\text{मुद्रा गुणक} = \frac{1}{\text{वैधानिक कोष अनुपात (LRR)}}$$

ऊपर दिए उदाहरण में LRR 0.2 है इसलिये

$$\text{मुद्रा गुणक} = \frac{1}{0.2} = 5$$

$$\text{कुल मुद्रा या जमा निर्माण} = \text{शुरू की जमा} \times \frac{1}{LRR}$$

$$= 100 \times \frac{1}{0.2} = 500$$

जितना कम वैधानिक कोष अनुपात होगा इतना ही अधिक गुणक का मूल्य होगा। यदि वैधानिक कोष अनुपात 0.1 है तो मुद्रा गुणक 10 $\left(=\frac{1}{0.1}\right)$ होगा और यदि वैधानिक कोष अनुपात 0.4 है तो मुद्रा गुणक 2.5 $\left(=\frac{1}{0.4}\right)$ होगा।

केंद्रीय बैंक

केंद्रीय बैंक देश की मैंद्रिक व्यवस्था का सिरमौर होता है। देश की मैद्रिक नीतियों की रचना और नियंत्रण ही उनका प्रमुख दायित्व होता है। भारत का केंन्द्रीय बैंक भारतीय रिजर्व बैंक है।

केन्द्रीय बैंक के कार्य इस प्रकार हैं:

1. करेंसी या मुद्रा निर्गमन का अधिकार

केन्द्रीय बैंक देश में मुद्रा जारी करने का एकधिकारी होता है। यह सारी मुद्रा वैधानिक दृष्टि से केन्द्रीय बैंक की मौद्रिक देयता मानी जाती है। दूसरे शब्दों में केन्द्रीय बैंक पर सारी निर्गमित मुद्रा के समतुल्य मान की संपत्तियों का सुरक्षित भंडार रखने का दायित्व होता है। इन संपत्तियों में सोना, चांदी इनके बने सिक्के, विदेशी मुद्रा और प्रतिभूतियां तथा राष्ट्रीय सरकार की स्थानीय मुद्रा में निर्दिष्ट प्रतिभूतियां सम्मिलित रहती हैं।

देश की केंद्रीय सरकार को केंद्रीय बैंक से उधार पाने का अधिकार होता है। इसी अधिकार का प्रयोग कर सरकार स्थानीय मुद्रा में निर्दिष्ट अपनी प्रतिभूतियाँ केंद्रीय बैंक को बेच देती है। इसके परिणामस्वरूप अर्थव्यवस्था में मुद्रा की आपूर्ति में वृद्धि हो जाती है। कारण यही है, जब भी केंद्रीय बैंक इन प्रतिभूतियों की खरीदारी करता है, वह इनके मान के समतुल्य मुद्रा जारी कर देता है। सरकार का यह अधिकार उसे अपनी ऋण आवश्यकताओं का मौद्रीकरण करने की सुविधा प्रदान कर देता है। सरकार के ऋण का मौद्रीकरण उसके नए-पुराने सार्वजनिक ऋण की गैर-मौद्रिक देनदारी को केन्द्रीय बैंक द्वारा निर्गमित मुद्रा में परिवर्तित कर उसे मौद्रिक देनदारी का स्वरूप प्रदान कर देता है।

मुद्रा को परिचलन में डालने या उससे निकालने का कार्य रिजर्व बैंक या बैंकिग विभाग करता है। उदाहरण ात: सरकार ने अपने बजट में घाटा दर्शाया है। उसे पूरा करने के लिए यह केंद्रीय बैंक से उधार लेती है। यह उधार राजकोषीय हुडियां केंद्रीय बैंक को बेचकर लिया जाता है। बैंक इन हुडियों का भुगतान अपने पास मौजूद मुद्रा भण्डार में कमी करके या फिर नई मुद्रा छाप कर करता है। इस प्रकार मिले नोटों के नए बंडल खर्च करके सरकार उन्हें परिचलन में डाल देती है।

2. सरकार का बैंकर

केंद्रीय बैंक संघ एवं राज्य सरकारों का बैंकर होता है। यह उनके सारे बैंक संबंधी कार्य निपटाता है तथा सरकार भी अपने सारे चालू खाते के नकद कोष केंद्रीय बैंक के पास जमा रखती है।

सरकार के बैंकर के रूप में केंद्रीय बैंक उसकी ओर से भुगतान स्वीकार करना, भुगतान करना, और विनिमय लेन-देन आदि के बैंकिय कार्यो का संपादन करता है। कई बार सरकार की प्रप्तियां उसकी तात्कालिक

देनदारियों से कम रह जाती हैं। इस दशा में केंद्रीय बैंक ही उसे अल्पावधि ऋण प्रदान करता है। यह ऋण भी राजकोषीय हुडियों की बिक्री के माध्यम से ही दिए जाते है। अस्थायी या तदर्थ राजकोषीय हुडियों के माध्यम से अल्पावधि ऋण प्राप्त करने का कार्य तो सरकारें सामान्य रूप से करती रहती हैं (यह कोई विशेष घटना नहीं होती)।

सरकार के बैंकर के रूप में केंद्रीय बैंक ही सार्वजनिक ऋण के प्रबंधन का दायित्व निभाता है। इसका अर्थ है कि केंद्रीय सरकार द्वारा जारी किए जाने वाले सभी ऋण पत्रों का प्रबंधकीय कार्य यही बैंक करता है। यह सरकार को ऋण के आकार, समय और अन्य शर्तो के विषय में उचित परामर्श देता है

केंद्रीय बैंक सरकार को बैंकिंग और वित्तीय मामलों में परामर्श भी देता है।

<u>3. बैंकों का बैंक तथा पर्यवेक्षक</u>

बैंकों के बैंक के रूप में रिजर्व बैंक अन्य बैंकों के नकदकोषों के एक अंश को अपने पास सुरक्षित रखता है, उन्हें अल्पावधि के लिए नकदी देता है और उन्हें केन्द्रीकृत समाशोधन और धनविप्रेषण सुविधाएं प्रदान करता है। बैंको को अपनी निवल देयताओं के एक निश्चित अंश के समान राशि केंद्रीय बैंक के पास जमा रखनी पड़ती है (इसे नकद जमा अनुपात कहते हैं)। इस प्रावधान के पीछे इसे मौद्रिक और साख नियंत्रण के अस्त्र के रूप में प्रयोग करने का मन्तव्य ही प्रमुख रहा है। बैंक इसके अतिरिक्त भी कुछ न कुछ अधिक राशि केंद्रीय बैंक के पास जमा रखते हैं ताकि अप्रत्याशित समाशोधन तथा उनके अपने ग्राहकों द्वारा अतिशय आहरण से संभावित कठिनाइयों से निपटा जा सके। इस प्रकार जमा कोष का प्रयोग कर केंद्रीय बैंक अंतिम ऋणदाता के रूप में उन बैंकों को उधारदे पाता है जिन्हें आवश्यकता हो।

केंद्रीय बैंक सभी वाणिज्य बैंकों के कार्यो का पर्यवेक्षण, नियमन और नियंत्रण भी करता है। इस नियमन में बैंकों को लायसेन्स जारी करने, शाखाओं के विस्तार, परिसंपत्तियों की तरलता, प्रबंधन, विलय और परिसमापन (बैंक को बंद करना) आदि कार्य सम्मिलित रहते है। नियंत्रण कार्य के लिए केंद्रीय बैंक समय-समय पर बैंको द्वारा जमा कराये गए परिपत्रों तथा अपने निरीक्षकों की रपटों का सहारा लेता है।

<u>4. मुद्रा की आपूर्ति तथा साख का नियंत्रण</u>

केंद्रीय बैंक अर्थव्यवस्था के बृहत्तरहितों मे मुद्रा और साख की आपूर्ति को नियंत्रित करता है। इस कार्य के लिए उसके पास कई नीति अस्त्र या माध्यम उपलब्ध रहते हैं। इन अस्त्रों को परिमाणात्मक एवं गुणात्मक नीति अस्त्र कहा जाता है। आइए पहले परिमाणात्मक नीति अस्त्रों पर विचार करें:

1. **<u>बैंक दर नीति</u> :** यह ब्याज की वह दर है जिस पर अंतिम ऋणदाता (केंद्रीय बैंक) अन्य बैंकों को अनुमोदित या अन्य प्रतिभूतियों की जमानत पर उधार देता है। इस दर में परिवर्तन का अर्थ है केंद्रीय बैंक से नकदी पाने की लागत में परिवर्तन। इस दर की वृद्धि का अर्थ है केंद्रीय बैंक से उधार की लागत में वृद्धि। इसके कारण बैंकों की साख निर्माण कर मुद्रा आपूर्ति बढ़ाने की क्षमता कम रह जाती है। इसकी व्याख्या इस प्रकार है: बैंक दर में वृद्धि होने पर वाणिज्य बैंक भी अधिक ऊँची ब्याज दर पर उधार देना चाहेंगे। इस कारण, व्यवसायी पहले की अपेक्षा कम उधार लेकर ही काम चलाने का प्रयास करने लगेंगे। परिणामत: बैंक साख की मांग में कमी आ जाएगी। इसके विपरीत

बैंक दर में कटौती का प्रभाव एकदम उलटा होगा। व्यवहार में बैंक दर नीतियों की प्रभावोत्पादकता इन कारकों पर निर्भर करती है: (क) बैंको की उधार लिए गए कोषों पर निर्भरता (यह धनात्मक कारक है) (ख) बैंकों की उधार कोषों के लिए मांग की उनके द्वारा वसूली गई ब्याज दर तथा चुकाई गई दर के अंतर के प्रति संवेदनशीलता (यह भी एक धनात्मक कारक होगा) (ग) बाजार में अन्य ब्याज दरों में आए परिवर्तन, तथा (घ) अन्य स्रोतों से नकदी की मांग और आपूर्ति में हुए परिवर्तन।

2. **खुले बाजार की प्रक्रियाएं :** यह केंद्रीय बैंक द्वारा अपने विवेक से खुले बाजार में आम जनता तथा बैंकों को सरकारी प्रतिभूतियों की बिक्री या उनसे इनकी खरीदारी होती है। विश्लेषण की दृष्टि से जनता या बैंकों को बिक्री में कई अंतर नहीं होता, क्योंकि अंततः किसी बैंक के पास जमा धन राशि का एक अंश रिजर्व बैंक के पास पहुँच जाता है। बैंकों को इन सरकारी प्रतिभूतियों की बिक्री से उनके सुरक्षित कोष कम हो जाते हैं। बैंकों द्वारा प्रतिभूतियों के निमित्त जारी चैकों की राशि उनके सुरक्षित कोष खाते से घटा दी जाती है। इससे बैंको की साख प्रदान कर मुद्रा की आपूर्ति बढ़ा पाने की क्षमता कम हो जाती है। जब, इसके विपरीत, केंद्रीय बैंक व्यावसायिक बैंकों से प्रतिभूतियाँ खरीदता है तो उन्हें भुगतान स्वरूप अपने चैक प्रदान करता है, उससे बैंकों के सुरक्षित कोषों में वृद्धि होती है। यह वृद्धि प्रत्यक्षतः उनकी साख दे सकने की क्षमता को बढ़ाकर मुद्रा आपूर्ति में वृद्धि करने में सहायक हो जाती है। मौद्रिक नीति के अस्त्र के रूप में यह खुले बाजार की प्रक्रियाएँ तभी पूरी तरह सफल हो पाती हैं जब देश में उन प्रतिभूतियों का सक्रिय रूप से कार्यरत् बाजार विद्यमान हो। यदि बैंक नियमित रूप से अतिरिक्त तरल कोष अपने पास जमा रखते हों तो इस नीति की प्रभावोत्पादकता बहुत संदेहास्पद हो जाएगी।

3. **<u>सुरक्षित कोष अनुपातों में परिवर्तन</u> :** बैंकों को दो प्रकार के सुरक्षित कोष अनुपात बनाए रखने होते है। एक तो रिजर्व बैंक के पास **जमा नकद कोष** होता है (CRR)। दूसरे को **वैधानिक तरलता अनुपात** (SLR) कहा जाता है। नकद जमा अनुपात की राशि तो उन्हें केंद्रीय बैंक के पास नकद रूप में जमा करानी होती है। यह उनकी निवल मांग एवं सावधि देनदारियों का एक अनुपात होती है। इसमें परिवर्तन मौद्रिक और साख नियंत्रण का नीतिअस्त्र है। इस अनुपात की वृद्धि से बैंकों के पास उपलब्ध नकदी कम हो जाती है, वे अधिक उधार नहीं दे पाते। इस अनुपात में कटौती बैंकों के पास उपलब्ध नकदी को बढ़ाकर उन्हे अधिक साख का सृजन करने में समर्थ बना देती है।

वैधानिक तरलता अनुपात (SLR) बैंको को अपनी मांग और सावधि देयताओं के एक अंश को मान्य परिसंपत्तियों में लगाने को बाध्य करता है। इनमें सम्मिलित है: (क) अतिरिक्त नकद (ख) ऐसी सरकारी एवं अन्य प्रतिभूतियां जिनके आधार पर केंद्रीय बैंक से ऋण नहीं लिए गए हों, तथा (ग) अन्य बैंकों के पास चालू खातों में जमा राशियाँ। इस अनुपात में परिवर्तन बैंकों की सरकारी प्रतिभूतियों को बेचने अथवा उनके आधार पर केंद्रीय बैंक से उधार ले पाने की स्वतंत्रता को प्रभावित करते है। इससे उनकी साख सृजन क्षमता, और परिणामत, मुद्रा की आपूर्ति पर प्रभाव पड़ता है। SLR की वृद्धि से साख सृजन क्षमता में कमी आती है।

आइए, अब हम गुणात्मक साख नियंत्रण नीति अस्त्रों पर भी कुछ विचार करें। ये साख के वैकल्पिक उपयोगों

के बीच आबंटन को प्रभावित करते हैं।

1. **प्रतिभूति ऋणों पर उधार-प्रतिभूति अंतर लागू करना:** यह उधार प्रतिभूति अंतर ऋण की राशि और ऋणकर्ता द्वारा प्रस्तुत प्रतिभूतियों के बाजार मूल्य का अंतर होता है। यदि केंद्रीय बैक 40% अंतर का आग्रह करता है तो व्यवसायी बैंक प्रतिभूतियों के मूल्य के 60% के सामान ही उधार दे पाते है। इस प्रकार इस प्रतिभूति अंतर में परिवर्तनों के माध्यम से बैंकों द्वारा दिए जा रहे प्रतिभूति ऋणों की राशियां प्रभावित होती हैं। यह नीतिअस्त्र अनेक प्रकार से उपयोगी होता है। उच्च प्रतिभूति अंतरों से सट्टेबाजी पर अंकुश लगता है, बैंक साख का प्रयोग सट्टे की बजाय उत्पादक निवेश में अधिक हो पाता है। सट्टेबाजी में कमी से बाजर में प्रतिभूतियों की कीमतों के अनावश्यक उतार-चढ़ाव भी कम हो जाते है।

2. **नैतिक प्रबोधन :** यह केंद्रीय बैंक द्वारा अन्य बैंकों से अपनी नीतियों का अनुपालन कराने की दृष्टि से किए गए उपदेंशों और दबावों का मिला जुला स्वरूप है। इसे विचार विमर्श, पत्रों, अभिभाषणों तथा बैंकों को संकेतात्मक संदेशों के माध्यम से व्यवहारिक रूप दिया जाता है। केंद्रीय बैंक समय-समय पर अपनी नीतिगत स्थिति की घोषण कर बैंकों से उसके अनुरूप कार्य करने की अपेक्षा करता है। यह नैतिक प्रबोधन साख नियंत्रण के परिमाणात्मक एवं गुणात्मक दोनों स्वरूपों के लिए प्रयुक्त हो सकता है।

3. **चयनात्मक साख नियंत्रण :** इनका प्रयोग भी सकारात्मक एवं निषेधात्मक स्वरूपों में हो सकता है। सकारात्मक प्रयोग विशेष क्षेत्रकों को अधिक साख सुलभ करा सकता है। (मुख्यत : वरीयता क्षेत्रों को) इनके निषेधात्मक प्रयोग में किन्ही कार्यो के लिए साख दिए जाने पर पूरी रोक भी लगाई जा

इकाई–8
आय और रोजगार का निर्धारण

अनैच्छिक बेरोजगारी : जन प्रचलित मजदूरी दर पर कार्य करने योग्य और इच्छुक सभी व्यक्तियों को काम नहीं मिलता तो यह अनैच्छिक बेरोजगारी की स्थिति है।

समग्र माँग : अर्थव्यवस्था में अन्तिम वस्तुओं की कुल माँग को समग्र माँग कहते हैं। यही अर्थव्यवस्था में अन्तिम वस्तुओं पर समग्र व्यय भी है।

समग्र माँग के घटक

1. निजी उपभोग के लिए वस्तुओं और सेवाओं की माँग। इसे निजी अन्तिम उपभोग व्यय भी कहते हैं।
2. निजी निवेश के लिए माँग।
3. सरकार द्वारा वस्तुओं व सेवाओं की माँग।
4. निबल निर्यात।

हमें आय व रोजगार के निर्धारण का अध्ययन केवल दो क्षेत्रकों के माडल के संदर्भ में करना है। अतः समग्र माँग के तीसरे व चौथे घटक पर विचार नहीं करेंगे। हमनें दो क्षेत्रक, परिवार व फर्म लिए हैं।

1. निजी उपभोग : निजी उपभोग के लिए वस्तुओं और सेवाओं की माँग परिवारों द्वारा की जाती है। इसे निजी अन्तिम **उपभोग व्यय** भी कहते हैं, इसे हम उपभोग व्यय कहेंगे। यहाँ उपभोग व्यय से तात्पर्य प्रत्याशित उपभोग व्यय है।

यह माँग बहुत सी बातों से प्रभावित होती है जैसे कि वस्तुओं और सेवाओं की कीमतें, आय, सम्पत्ति, संभावित आय और व्यक्तियों की रूचि व प्राथमिकताएँ आदि। केंस (Keynes)ने उपभोग के एक मौलिक मनोवैज्ञानिक नियम की रचना कर उपभोग क्रियाओं को एक व्यवहारिक नियम का रूप देने का कार्य किया।

केंस के अनुसार जैसे–जैसे आय बढ़ती है उपभोग व्यय भी बढ़ा दिया जाता है। पर उपभोग व्यय की यह वृद्धि आय में वृद्धि से कम होती है। उपभोग व आय के इस सम्बन्ध को **उपभोग फलन** कहते हैं। उपभोग फलन को हम निम्नलिखित समीकरण के रूप में व्यक्त कर सकते हैं :

$$c = \bar{C} + bY \; ; \; \bar{C} > o, o < b < 1$$

c = उपभोग

$\bar{C}$ = स्वायत उपभोग (शून्य आय पर उपभोग व्यय)

b = सीमान्त उपभोग प्रवृति

Y = आय का स्तर

$\bar{C}$ को घनात्मक माना गया है, यानि आय के शून्य स्तर पर भी उपभोग व्यय है। अतः किसी भी स्थिति में उपभोग व्यय शून्य नहीं हो सकता। 'b' उपभोग व्यय में परिवर्तन और आय में परिवर्तन का अनुपात

है, अर्थात् आय में प्रति इकाई परिवर्त्तन से उपभोग व्यय में परिवर्त्तन की दर। इसे **सीमान्त उपभोग प्रवृति** (सी.उ.प्र.) कहते हैं। उदाहरण के लिये यदि b = 0.6 तो आय में 1 रु. वृद्धि होने पर उपभोग व्यय में 60 पैसे वृद्धि होगी। यदि b = 0.45 तो आय में 1 रु. वृद्धि होने से उपभोग व्यय में 45 पैसे की वृद्धि होगी।

b यानि सीमान्त उपभोग प्रवृति को घनात्मक माना गया है और इसका मूल्य 0 और 1 के बीच है। इसका अर्थ है कि आय में 1 रु. की वृद्धि से उपभोग व्यय में वृद्धि 1 रु. से कम होगी। यदि b = 0.9 तो आय में 1 रु. वृद्धि से उपभोग व्यय में 90 पैसे की वृद्धि होगी। सीमान्त उपभोग प्रवृति को स्थिर माना गया है अब हम एक संख्यात्मक उदाहरण लेते हैं।

मान लीजिए उपभोग फलन C = 100 + 0.8Y है।

आय के अलग-अलग स्तर पर सीमान्त उपभोग प्रवृति कितनी होगी और कुल उपभोग व्यय कितना होगा यह तालिका 1 में दर्शाया गया है।

तालिका-1 उपभोग, आय व सीमान्त उपभोग प्रवृति

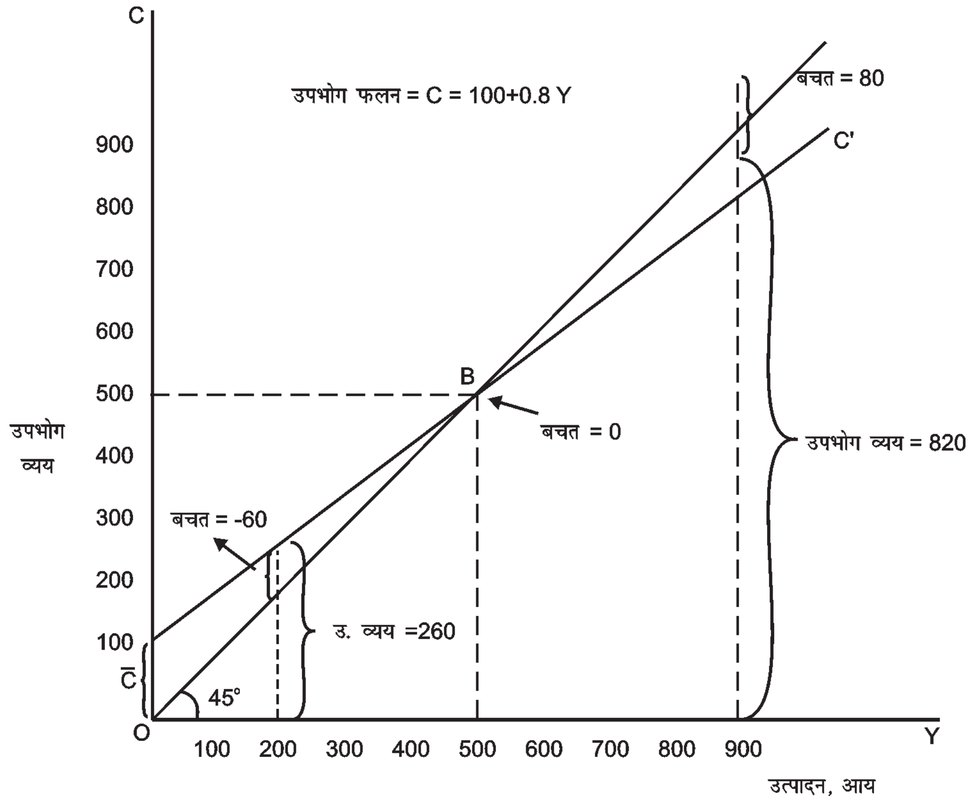

इस तालिका में आय के अलग-अलग स्तर पर उपभोग व्यय दर्शाया गया है और उपभोग व्यय ऊपर दिए गए उपभोग फलन के आधार पर निकाला गया है। जैसे कि जब आय शून्य है तो C = 100 + 0.8 x 0 = 100 जब आय 500 है तो C = 100 + 0.8 x 500 = 100 + 400 = 500

कालम (1) आय के विभिन्न स्तर पर उपभोग व्यय दर्शाता है। कालम (2) उपभोग के विभिन्न स्तर दर्शाता है। कालम (3) आय में परिवर्तन दर्शाता है। कालम (4) उपभोग में परिवर्तन दर्शाता है। कालम

(5) सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति का मूल्य दर्शाता है। दिए गए उपभोग फलन में सीमान्त उपभोग प्रवृति 0.8 है और यह स्थिर है। अत: कालम (5) में सीमान्त उपभोग प्रवृति आय के प्रत्येक स्तर पर 0.8 है।

इस उपभोग फलन को रेखाचित्र पर भी दिखा सकते हैं। रेखाचित्र 1 में इसे दर्शाया गया है।

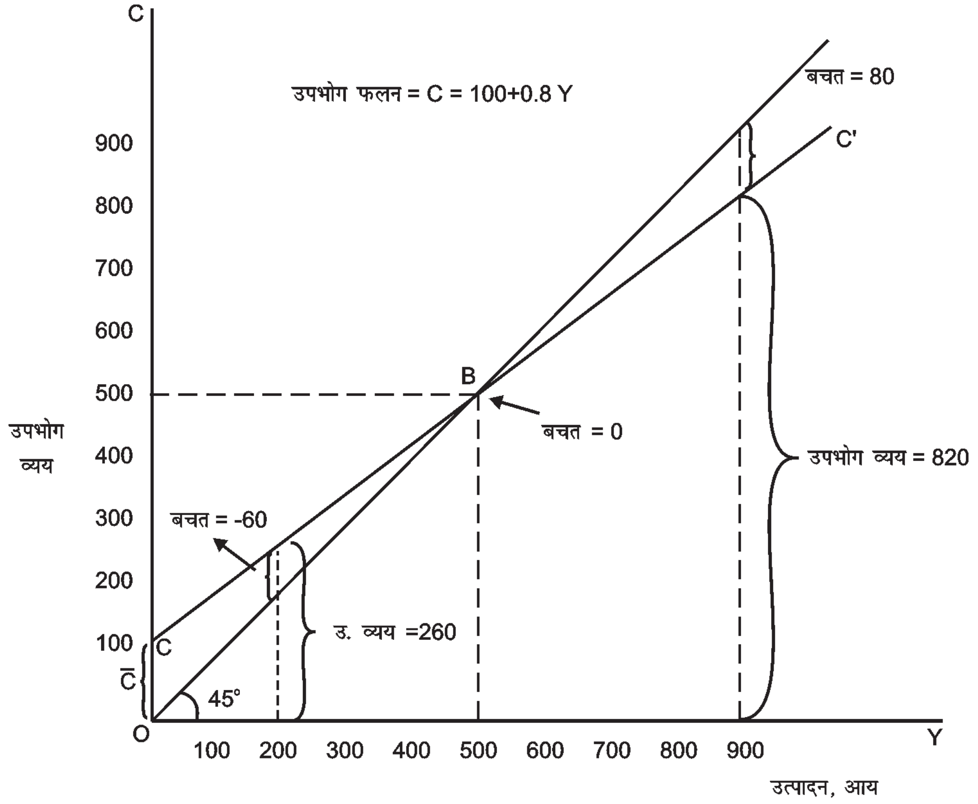

रेखाचित्र 1 – उपभोग वक्र

इस रेखाचित्र को समझने के लिये पहले हम इसमें उदगम बिन्दु से खींची गई 45^0 की रेखा पर विचार करेंगे। OX और OY अक्ष पर माप का पैमाना समान है। 45^0 रेखा की यह विशेषता है कि इस पर कोई भी बिन्दु OX अक्ष व OY अक्ष से समान दूरी पर है। OX अक्ष से दूरी उपभोग व्यय मापती है और OY अक्ष से दूरी आय मापती है।

इस प्रकार 45^0 रेखा के किसी भी बिन्दु पर आय व उपभोग व्यय बराबर हैं। हमारे उदाहरण में लिए गए उपभोग फलन के आधार पर खींची गई उपभोग वक्र एक सीधी रेखा CC' है जिसका ढलान(Slope) 0.8 है। यह उपभोग वक्र 45^0 रेखा को B बिन्दु पर काटती है। यह बिन्दु दर्शाता है कि आय के स्तर 500 पर उपभोग व्यय 500 है। 45^0 रेखा से ऊपर कोई भी बिन्दु दर्शाएगा कि उपभोग व्यय आय से अधिक है और इसके नीचे कोई भी बिन्दु दर्शाएगा कि उपभोग व्यय आय से कम है। OY अक्ष पर C बिन्दु दर्शाता है कि आय शून्य होने पर उपभोग व्यय 100 है।

उपभोग वक्र के B बिन्दु से बाँई ओर के भाग पर कोई भी बिन्दु यह दर्शाता है कि उपभोग व्यय आय से अधिक है और इसके B बिन्दु से दाँयी ओर के हिस्से पर कोई बिन्दु दर्शाता है कि उपभोग व्यय आय से कम है। उदाहरण के लिये जब आय 200 है तो उपभोग व्यय 260 है और जब आय 900 है तो उपभोग

व्यय 820 है।

अत: जब उपभोग वक्र 45^0 रेखा से ऊपर होती है तो यह दर्शाती है कि उपभोग व्यय आय से अधिक है यानि अर्थव्यवस्था में बचत ऋणात्मक हैं जहाँ उपभोग वक्र 45^0 रेखा को काटती है वह बिन्दु दर्शाता है कि आय और उपभोग व्यय बराबर हैं और बचत शून्य है। जब उपभोग वक्र 45^0 रेखा से नीचे होती है तो उपभोग व्यय आय से कम होता है और बचत घनात्मक होती है। उपभोग वक्र और 45^0 रेखा के ऊर्ध्व (vertical) अन्तर द्वारा बचत मापी जा सकती है।

उपभोग और बचत

अब हम उपभोग व बचत के सम्बन्ध पर विचार करेंगे। यह सम्बंध इस प्रकार है :

$$S = Y - C$$

यह समीकरण दर्शाता है कि आय का वह भाग जिसे उपभोग पर खर्च नहीं किया वह बचत है। इसी समीकरण व उपभोग फलन के आधार पर हम बचत फलन ज्ञात कर सकते हैं। बचत फलन यह दर्शाता है कि आय के विभिन्न स्तरों पर बचत के स्तर क्या हैं।

$$\begin{aligned} S &= Y - C \\ &= Y - (\bar{C} + bY) \\ &= Y - \bar{C} - bY \\ &= -\bar{C} + Y - bY \\ S &= -\bar{C} + (1 - b)Y \end{aligned}$$

[$\because C = \bar{C} + by$
जहाँ $\bar{C}$ = शून्य आय पर उपभोग]

यही बचत फलन है। यदि आय शून्य है तो बचत $\bar{C}$ होगी यानि ऋणात्मक होगी और $\bar{C}$ के बराबर होगी। यह ऋणात्मक बचत शून्य आय स्तर पर उपभोग व्यय ($\bar{C}$) के बराबर है।

(1-b) बचत वक्र का ढलान (Slope) है जो यह दर्शाता है कि आय के बढ़ने पर उसका कितना भाग बचाया जाता है। इसे **सीमांत बचत प्रवृति** कहते हैं। क्योंकि b का मूल्य एक से कम माना गया है इसलिये (1-b) का मूल्य घनात्मक है अर्थात् सीमान्त बचत प्रवृति घनात्मक है। यदि सीमान्त उपभोग प्रवृति 0.8 है तो सीमान्त बचत प्रवृति (1–0.8) = 0.2 होगी। यानि यदि आय 1 रु. बढ़े तो बचत 20 पैसे बढ़ेगी।

अत: हम कह सकते हैं कि सीमांत उपभोग प्रवृति + सीमांत उपभोग प्रवृति = 1

उपभोग फलन के संदर्भ में लिए गए सांख्यिक उदाहरण के आधार पर हम बचत फलन ज्ञात करते हैं –

$$\begin{aligned} S &= \bar{C} + (1 - b)Y \\ &= -100 + (1 - 0.8)Y \\ S &= -100 + 0.2Y \end{aligned}$$

तालिका 2 : उपभोग – बचत सम्बन्ध

आय Y	आय मे परिवर्तन ΔY	उपभोग C	उपभोग में परिवर्तन ΔC	(सी. उ. प्र.) $\Delta C/\Delta Y$	बचत S	बचत में परिवर्तन ΔS	(सी. ब. प्र.) $\Delta S/\Delta Y$	C + S	MPC+ MPS
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)
0	-	100	-	-	-100	-	-	0	-
100	100	180	80	0.8	-80	20	0.2	100	1
200	100	260	80	0.8	-60	20	0.2	200	1
300	100	340	80	0.8	-40	20	0.2	300	1
400	100	420	80	0.8	-20	20	0.2	400	1
500	100	500	80	0.8	0	20	0.2	500	1
600	100	580	80	0.8	20	20	0.2	600	1
700	100	660	80	0.8	40	20	0.2	700	1
800	100	740	80	0.8	60	20	0.2	800	1
900	100	820	80	0.8	80	20	0.2	900	1
1000	100	900	80	0.8	100	20	0.2	1000	1

तालिका 2 में आय के विभिन्न स्तर पर उपभोग व्यय और बचत दर्शायी गई है। ध्यान दें कि उपभोग व्यय और बचत का योग सदा आय के बराबर होता है जैसा कि तालिका के कालम (9) में दर्शाया गया है। और सी.उ.प्र. व सी.ब.प्र. का योग सदा 1 के बराबर होता है जैसा कि कालम 10 में दिखाया गया है।

कालम 1 से 5 वही हैं जो तालिका 1 में थे कालम 6 में आय के विभिन्न स्तर पर होने वाली बचत दिखाई गई है जिसे बचत फलन से ज्ञात किया गया है। कालम 8 सी.ब.प्र. निकालने की विधि दर्शाता है। जब आय 600 से बढ़कर 700 होती है तो बचत 20 से बढ़कर 40 हो जाती है। अतः सी.ब.प्र. = 20/100 = 0.2

तालिका 2 में दी गई सूचना को रेखाचित्र पर दिखाया जा सकता है जैसा कि रेखाचित्र 2 में दिखाया गया है।

रेखाचित्र 2 का भाग (क) उपभोग वक्र दर्शाता है जो उपभोग फलन के आधार पर खींची गई है। भाग (ख) बचत वक्र दर्शाता है। भाग (क) में 45^0 रेखा और उपभोग रेखा के बीच का ऊर्ध्व (vertical) अन्तर बचत है। इन्हीं अन्तरों को दर्शाते हुए भाग (ख) की बचत वक्र खींची गई है।

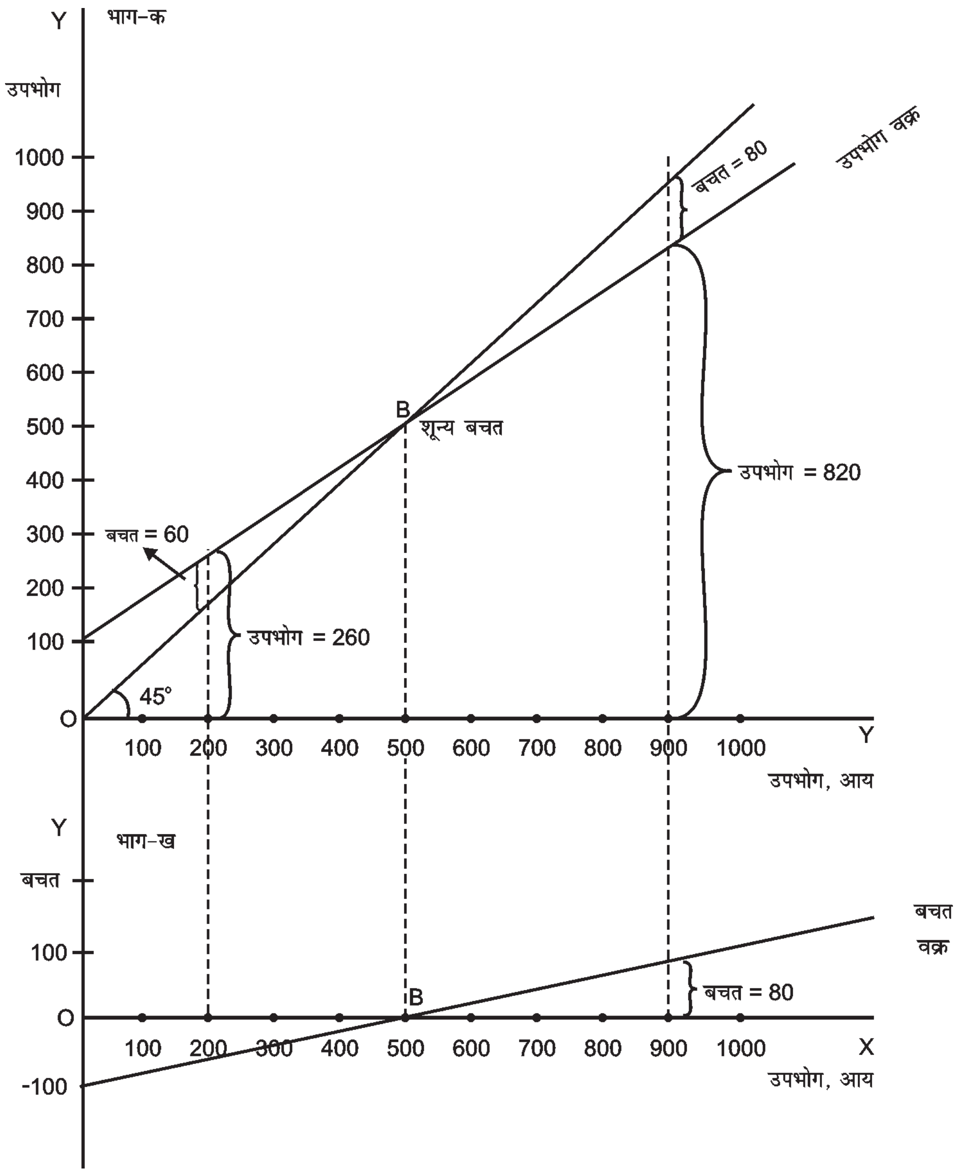

रेखाचित्र 2

जब आय 500 है तो भाग (क) में उपभोग वक्र दर्शाती है कि उपभोग व्यय भी 500 रुपये है। अत: बचत शून्य है। भाग (ख) में शून्य बचत B बिन्दु दर्शाता है जहाँ बचत वक्र क्षैतिज अक्ष को काटती है। आय 200 होने पर उपभोग व्यय 260 है और बचत -60 है। आय 900 होने पर उपभोग व्यय 820 है और बचत 80 है।

अत: रेखाचित्र के भाग क में B बिन्दु की बाँयी ओर उपभोग वक्र 45^0 रेखा के ऊपर है जो यह दर्शाता है कि यहाँ उपभोग व्यय आय से अधिक है और बचत ऋणात्मक है। भाग ख में बचत वक्र B बिन्दु से बाँयी ओर क्षैतिज अक्ष के नीचे है।

भाग क में B बिन्दु के दाँयी ओर उपभोग वक्र 45^0 रेखा के नीचे है जो दर्शाता है कि उपभोग व्यय आय से कम है। इसलिये भाग ख में B से दाहिनी ओर बचत वक्र क्षैतिज अक्ष से ऊपर है जो घनात्मक बचत दर्शाती है।

औसत उपभोग प्रवृति और औसत बचत प्रवृति

उपभोग फलन से हम आय के अलग–अलग स्तर पर उपभोग व्यय ज्ञात कर सकते हैं। उपभोग व्यय और आय का अनुपात (C/Y) औसत उपभोग प्रवृति कहलाता है।

इसी प्रकार बचत फलन से आय के अलग–अलग स्तर पर बचत ज्ञात की जा सकती है। बचत और आय के अनुपात (C/S) को औसत बचत प्रवृति कहते हैं औसत उपभोग प्रवृति और औसत बचत प्रवृति का योग सदा 1 के बराबर होता है। इसका प्रमाण नीचे दिया गया है।

$$Y = C + S$$

दोनों ओर को Y से भाग करते हैं

$$\frac{Y}{Y} = \frac{C}{Y} \quad \frac{S}{Y}$$

1 = औसत उपभोग प्रवृति + औसत बचत प्रवृति

पहले दिए गए उदाहरण के आधार पर नीचे दी गई तालिका 3 बनाई गई है जिसमें आय के विभिन्न स्तरों पर औसत उपभोग प्रवृति और औसत बचत प्रवृति के मूल्य दर्शाए गए हैं।

तालिका ३ : औसत उपभोग और बचत प्रवृतियाँ

आय Y	**उपभोग व्यय** C	**औ.उ.प्र.** (APC) (2)/(1)	**बचत** S	**औ.ब.प्र.** (APS) (4)/(1)	**औ.उ.प्र.+औ.ब.प्र.** (3) + (5)
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
0	100	-	-100	-	-
100	180	1.8	-80	-0.8	1
200	260	1.3	-60	-0.3	1
300	340	1.13	-40	-0.13	1
400	420	1.05	-20	-0.05	1
500	500	1	0	0	1
600	580	0.97	20	0.03	1
700	660	0.94	40	0.06	1
800	740	0.92	60	0.08	1
900	820	0.91	80	0.09	1
1000	900	0.90	100	0.10	1

नोट : तालिका में सभी आंकड़ों को 2 दशमलव बिंदुओं तक ही आकलित किया गया है।

कालम (3) औसत उपभोग प्रवृति निकालने की विधि दर्शाता है और कालम (5) औसत बचत प्रवृति निकालने की विधि दर्शाता है। कालम (6) दर्शाता है कि औ.उ.प्र. और औ.ब.प्र. का योग सदा 1 होता है।

इस तालिका का कालम (3) यह दर्शाता है कि जैसे–जैसे आय बढ़ती है औसत उपभोग प्रवृति घटती जाती है और कालम (5) दर्शाता है कि औसत बचत प्रवृति बढ़ती जाती है।

2. निजी निवेश

निजी निवेश की माँग का अर्थ है फर्मों के द्वारा प्रत्याशित निवेश व्यय। इसमें भौतिक पूंजी में वृद्धि और स्टॉक में वृद्धि शामिल होते हैं। इस अध्ययन में हम यह परिकल्पना करते हैं कि निवेश व्यय स्वायत्त है। इसका अर्थ कि निवेश संबंधी निर्णय उत्पादन सहित इसके किसी भी निर्धारक तत्त्व से प्रभावित नहीं होते।

समग्र पूर्ति

एक देश की आर्थिक सीमा में वस्तुओं व सेवाओं का कुल उत्पादन समग्र पूर्ति कहलाता है। इसका तात्पर्य अर्थव्यवस्था में प्रत्याशित समग्र उत्पादन से है। यह परिकल्पना की जाती है कि अल्पकाल में वस्तुओं की कीमतें नहीं बदलती और पूर्ति पूर्णतया लोचदार है। दिए हुए कीमत स्तर पर उत्पादन पूर्ण रोजगार की स्थिति तक बढ़ाया जा सकता है। अतः कुल उत्पादन कितना होगा यह मुख्यतः अर्थव्यवस्था में समग्र माँग पर निर्भर करता है।

अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार की स्थिति में पहुँचने तक उत्पादन, आय व रोजगार का स्तर एक साथ एक ही दिशा में परिवर्त्तित होते हैं। उत्पादन में वृद्धि का अर्थ है रोजगार के स्तर में वृद्धि और आय के स्तर में वृद्धि। उत्पादन में कमी से रोजगार व आय का स्तर भी कम हो जाता है।

उत्पादन, आय व रोजगार के संतुलन स्तर का निर्धारण

हम अपने अध्ययन में केवल दो क्षेत्रक, परिवार और फर्म ही शामिल करेंगे। अतः इस अध्ययन में समग्र माँग के केवल दो घटक हैं : उपभोग माँग और निवेश माँग। संतुलन स्तर के निर्धारण की दो विधियाँ हैं :

(1) उपभोग जमा निवेश विधि [(C+I) approach]

उत्पादन के स्तर के निर्धारण की एक विधि उपभोग जमा निवेश विधि है।

रेखाचित्र 3 में उत्पादन या आय के विभिन्न स्तरों पर कुल व्यय अर्थात् समग्र माँग दर्शायी गई है।

CC वक्र उपभोग वक्र है जो आय के प्रत्येक स्तर पर प्रत्याशित उपभोग व्यय दर्शाती है। इसमें हम स्वायत्त निवेश जोड़ देते हैं। इससे हमें C+I वक्र प्राप्त हो जाती है। अब हम 45^0 रेखा की सहायता से उत्पादन व आय का संतुलन स्तर निर्धारित कर सकते हैं। 45^0 रेखा पर प्रत्येक बिन्दु की OX अक्ष से दूरी OY अक्ष से दूरी के बराबर होती है जिसका अर्थ कि इस वक्र पर प्रत्येक बिन्दु उत्पादन व आय का वह स्तर दर्शाता है जो समग्र माँग के बराबर है। अर्थव्यवस्था संतुलन की स्थिति में तभी होती है जब समग्र माँग और समग्र पूर्ति बराबर हों।

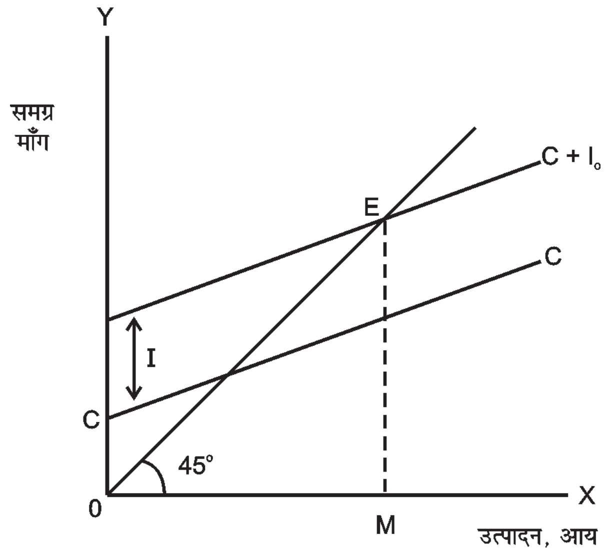

रेखाचित्र 3 उपभोग जमा निवेश विधि से उत्पादन का निर्धारण

(C + I_O) वक्र विभिन्न उत्पादन स्तरों पर परिवारों और फर्मों के प्रत्याशित व्यय को दर्शाता है। अर्थव्यवस्था का संतुलन बिन्दु E होगा जहाँ (C+I_O) वक्र 45^0 रेखा को काटती है। E बिन्दू OM उत्पादन के स्तर को दर्शाता है और EM समग्र माँग को दर्शाता है। OM और EM बराबर हैं। अतः OM उत्पादन स्तर संतुलन स्तर है क्योंकि इस पर समग्र माँग (C+I_O) समग्र पूर्ति के बराबर है।

समायोजना की प्रक्रिया

संतुलन की स्थिति में प्रत्याशित व्यय और प्रत्याशित उत्पादन बराबर होते हैं। जब ये दोनों बराबर नहीं होते तो उत्पादन में परिवर्तन होता है और अन्त में ये दोनों बराबर हो जाते हैं।

इस प्रक्रिया को समझने के लिए हम एक ऐसी स्थिति लेते है जिसमें उत्पादन स्तर रेखाचित्र 3 के संतुलन उत्पादन स्तर OM से अधिक है। ये स्तर 45^0 रेखा पर E बिन्दु के दाँयी ओर होगा और इस स्तर पर (C+I_O) रेखा 45^0 रेखा के नीचे होगी। अतः प्रत्याशित व्यय प्रत्याशित उत्पादन से कम होगा। इसका अर्थ है कि फर्म जितना उतपादन कर रही हैं, उपभोक्ता और फर्म दोनों मिलकर उससे कम माल खरीदेंगे। परिण ाामस्वरूप स्टॉक में अप्रत्याशित वृद्धि हो जाएगी। बिना बिके माल के स्टॉक में इस अप्रत्याशित वृद्धि के परिण ाामस्वरूप फर्में उत्पादन व रोजगार का स्तर कम कर देंगी। उत्पादन घटाने की यह प्रक्रिया तब तक चलेगी जब तक की उत्पादन घटकर OM स्तर तक नहीं आ जाता। OM स्तर पर समग्र माँग और समग्र पूर्ति बराबर हैं। अतः फिर से संतुलन की स्थिति पर पहुँच जाते हैं।

अब हम ऐसी स्थिति लेते हैं जिसमें उत्पादन का स्तर संतुलन स्तर OM से कम है। उत्पादन के ऐसे स्तर पर (C+I_O) वक्र 45^0 रेखा के ऊपर होगी। इसका अर्थ की प्रत्याशित व्यय प्रत्याशित उत्पादन से अधिक होगा। समग्र माँग कुल उत्पादन से अधिक है। इसके फलस्वरूप स्टॉक में अप्रयोजित कमी आने लगेगी। इसके परिणामस्वरूप फर्में रोजगार और उत्पादन के स्तर को बढ़ाऐंगी। उत्पादन बढ़ाने की यह प्रक्रिया तब तक चलेगी जब तक की उत्पादन बढ़कर OM स्तर पर नहीं पहुँच जाता। OM स्तर पर समग्र माँग और समग्र पूर्ति बराबर हैं। अब कोई परिवर्त्तन नहीं होगा।

(2) बचत = निवेश विधि (S = I approach)

रेखाचित्र 4 में उपभोग फलन के आधार पर उपभोग वक्र और उसके अनुरूप बचत वक्र दिखाई गई हैं। उपभोग वक्र पर विभिन्न बिन्दु आय के विभिन्न स्तरों पर प्रत्याशित उपभोग व्यय दर्शाते हैं। इसी प्रकार बचत वक्र पर विभिन्न बिन्दु आय के विभिन्न स्तरों पर प्रत्याशित बचत दर्शाते हैं। ये दोनों वक्र एक दूसरे के पूरक हैं क्योंकि Y = C + S.

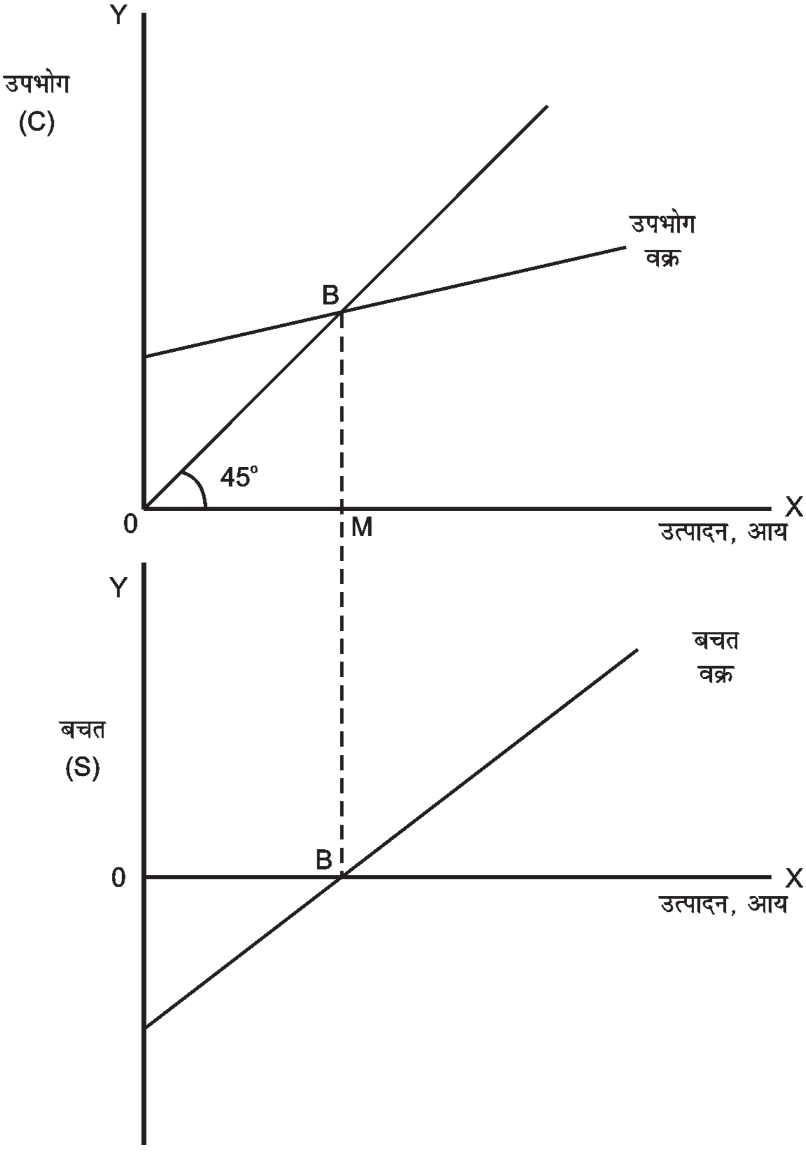

रेखाचित्र 4 : उपभोग वक्र और बचत वक्र

निवेश व्यय

हमने स्वायत्त निवेश की परिकल्पना की है जिसका अर्थ है कि उत्पादन के हर स्तर पर निवेश व्यय स्थिर रहता है। रेखाचित्र 5 में निवेश वक्र दर्शायी गयी है।

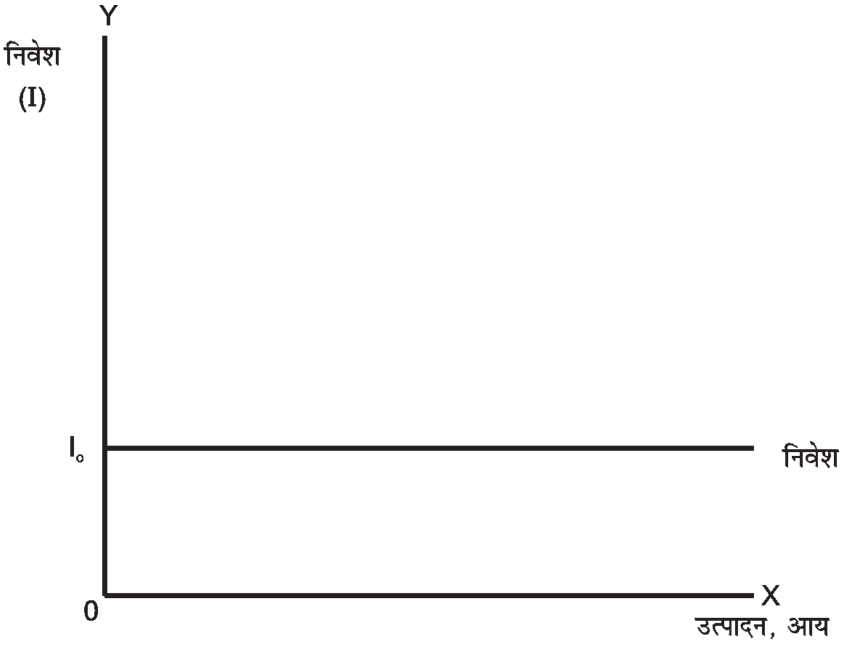

रेखाचित्र 5 : निवेश वक्र

निवेश वक्र OX अक्षर के समानान्तर है क्योंकि निवेश व्यय स्थिर है।

उत्पादन का संतुलन स्तर

बचत वक्र और निवेश वक्र दोनों को एक साथ रेखाचित्र 6 में दिखाया गया है। ये दोनों वक्र एक दूसरे को E पर काटती हैं। यह बिन्दु उत्पादन के OM स्तर को दर्शाता है और यह उत्पादन का संतुलन स्तर है।

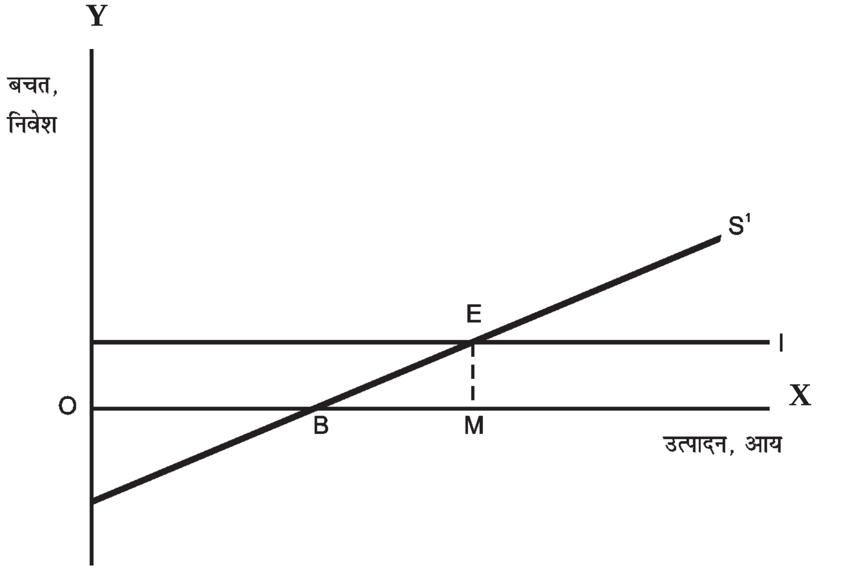

रेखाचित्र 6 : बचत चक्र और निवेश वक्र द्वारा निर्धारित संतुलन

संतुलन का अर्थ

रेखाचित्र 6 में E बिन्दु दर्शाता है कि OM उत्पादन पर परिवारों की आयोजित बचत फर्मों के आयोजित निवेश के बराबर हैं। जब आयोजित बचत व आयोजित निवेश बराबर नहीं होते तो उत्पादन में परिवर्त्तन होता है और इस परिवर्त्तन से ये दोनों बराबर हो जाते हैं। यदि उत्पादन कर स्तर OM है तो आयोजित बचत EM है और आयोजित निवेश भी EM है। अतः यह उत्पादन का संतुलन स्तर है। इस स्तर में परिवर्त्तन की कोई प्रवृति नहीं है।

यदि अर्थव्यवस्था में उत्पादन व आय का स्तर OM से अधिक है तो रेखाचित्र दर्शाता है कि बचत वक्र निवेश वक्र के ऊपर है। अतः आय के इस स्तर पर बचत निवेश से ज्यादा हैं। दूसरे शब्दों में कुल व्यय कुल उत्पादन से कम है। परिणामस्वरूप माल का स्टाक (अप्रत्याशित) बढ़ जाएगा। इस स्थिति को ठीक करने के लिए फर्म उत्पादन घटा देंगी। जब उत्पादन घट कर OM हो जाएगा तो संतुलन की स्थिति आ जाएगी। इस स्तर पर प्रत्याशित बचत और निवेश बराबर हैं और किसी प्रकार के परिवत्तर्न की प्रवृति नहीं होगी।

यदि अर्थव्यवस्था में उत्पादन का स्तर OM से कम हो तो इस स्तर पर बचत निवेश से कम होगी। इसका अर्थ है कि माल का स्टॉक घट जाएगा। इस स्थिति को ठीक करने के लिए फर्म उत्पादन बढ़ाएँगी। जब उत्पादन बढ़कर OM हो जाएगा तो प्रत्याशित बचत और निवेश बराबर होंगे और किसी भी प्रकार के परिवर्त्तन की प्रवृति नहीं होगी। अतः संतुलन की स्थिति स्थापित हो जाएगी।

इस प्रकार उत्पादन का केवल OM स्तर ही संतुलन स्तर है जिस पर प्रत्याशित बचत और प्रत्याशित निवेश बराबर हैं।

संतुलन की स्थिति में आयोजित व्यय और आयोजित उत्पादन बराबर होते हैं।

इसे एक संख्यात्मक उदाहरण द्वारा सरलता से समझा जा सकता है।

मान लीजिए उपभोग फलन : $C = 1000 + 0.67\ Y$ है और इसके अनुरूप बचत फलन $= S = — 1000 + 0.33\ Y$ होगा! तालिक 4 में कालम (1) में आय व उत्पादन के विभिन्न स्तर दिए गए हैं। उपभोग फलन व बचत फलन के आधार पर कालम (2) व (3) में क्रमशः आयोजित उपभोग व्यय और बचत दिखायी गई है आयोजित निवेश 200 माना गया है। कालम (6) में उत्पादन व आय के विभिन्न स्तर पर समग्र माँग (कालम (2) व (4) का योग) दर्शायी गयी है।

तालिका 4 उत्पादन के स्तर का निर्धारण (करोड़ रु. में)

उत्पादन और आय	प्रायोजित उपभोग	प्रायोजित बचत (3)=(1)-(2)	प्रायोजित निवेश	उत्पादन और आय (5) = (1)	समग्र मांग (6)=(2)+(4)	उत्पादन में प्रवृत्ति
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)
4200	3800	400	200	4200>	4000	कमी
3900	3600	300	200	3900>	3800	कमी
3600	3400	200	200	3600=	3600	संतुलन
3300	3200	100	200	3300<	3400	वृद्धि
3000	3000	0	200	3000<	3200	वृद्धि
2700	2800	-100	200	2700<	3000	वृद्धि

इस तालिका की पहली पंक्ति को ध्यान से पढ़े तो पता चलता है कि यदि उत्पादन और आय का स्तर (समग्र पूर्ति) 4200 करोड़ रु है तो समग्र माँग केवल 4000 करोड़ रुपये के उत्पादन की है। इस स्थिति में स्टॉक में अप्रयोजित वृद्धि होगी (200 करोड़ रुपये के मूल्य का स्टॉक)। इस स्थिति को ठीक करने के लिए फर्में उत्पादन घटा देंगी।

तालिका की अन्तिम पंक्ति इस स्थिति से एकदम विपरीत स्थिति दर्शा रही है। फर्मों का कुल उत्पादन 2700 करोड़ रु. का है लेकिन इस स्तर पर समग्र माँग 3000 करोड़ रु. के माल की है। इस स्थिति में स्टॉक में अनचाही व अप्रयोजित कमी आ जाएगी। इस कमी को दूर करने के लिये फर्में उत्पादन अधिक करेंगी।

अतः जब भी प्रत्याशित व्यय (समग्र मांग) प्रत्याशित उत्पादन (समग्र पूर्ति) से अधिक होता है तो उत्पादन का स्तर बढ़ाया जाता है। जब प्रत्याशित व्यय प्रत्याशित उत्पादन से कम होता है तो उत्पादन के स्तर को घटाया जाता है। संतुलन की स्थिति तभी होती है जब प्रत्याशित आय या उत्पादन (समग्र पूर्ति) प्रत्याशित व्यय (समग्र माँग) के बराबर है। तालिका 4 में उत्पादन का यह स्तर 3600 करोड़ रुपये है जिस पर समग्र माँग भी 3600 करोड़ रु. है।

गुणक

हमने इस अध्ययन में यह परिकल्पना भी की है कि सीमान्त उपभोग प्रवृति स्थिर रहती है। आय में परिवर्त्तन से इसमें परिवर्त्तन नहीं आता। अब तक के अध्ययन से हमें यह भी ज्ञात हुआ कि आय, उत्पादन व रोजगार का स्तर कितना होगा यह समग्र माँग पर निर्भर करता है क्योंकि पूर्ति तो पूर्णतया लोचदार है। दो क्षेत्रीय माडल में उपभोग व्यय और निवेश व्यय यही दो समग्र माँग के घटक हैं। उपभोग व्यय आय (उत्पादन) पर निर्भर करता है। यदि अर्थव्यवस्था में उत्पादन, आय व रोजगार का स्तर बढ़ाना हो तो निवेश को बढ़ाना होगा। जब निवेश व्यय बढ़ाया जाता है तो इससे आय (उत्पादन) में होने वाली वृद्धि निवेश में वृद्धि से कई गुना होती है। निवेश में वृद्धि का जितने गुना आय में वृद्धि होती है उसे गुणक कहते हैं।

गुणक की प्रक्रिया को एक संख्यात्मक उदाहरण द्वारा सरलता से समझा जा सकता है। यह ध्यान रखें कि अर्थव्यवस्था में जितना व्यय बढ़ता है उतनी ही आय बढ़ती है।

मान लीजिए अर्थव्यवस्था में सीमान्त उपभोग प्रवृति 0.8 है और निवेश 1000 रुपये बढ़ता है अर्थात् व्यय 1000 रु. बढ़ा जिससे आय भी 1000 रु. बढ़ेगी। बढ़ी हुई आय का 0.8 भाग उपभोग पर व्यय किया जाएगा क्योंकि सी.उ.प्र. 0.8 है। अतः अब उपभोग व्यय 800 रुपये बढ़ेगा जिससे आय 800 रुपये बढ़ेगी। आय में 800 रुपये की वृद्धि से उपभोग व्यय 800 x 0.8 = 640 रुपये बढ़ेगा। इससे आय 640 रुपये बढ़ेगी। फिर उपभोग व्यय 640 x 0.8 = 512 रु. बढ़ेगी। इससे आय 512 रु. बढ़ेगी। इस प्रकार आय में वृद्धि और उपभोग में वृद्धि की एक श्रृंखला शुरू हो गई। आय और व्यय में होने वाली हर अगली वृद्धि कम होती जा रही है क्योंकि बढ़ी हुई आय का एक भाग बचाया जा रहा है। (सी.ब.प्र. = 0.2) आय में वृद्धि की एक अनन्त श्रृंखला बन जाएगी जो शून्य की ओर अग्रसर है।

तालिका 5 में निवेश में परिवर्त्तन के कारण आय और उपभोग में परिवर्त्तनों की श्रृंखला दिखाई गई है।

तालिका 5 गुणक की प्रक्रिया

(आधार : Δ निवेश = 1000, सीमांत उपभोग प्रवृति = 0.8 = 4/5)

आय में वृद्धि	**उपभोग व्यय में वृद्धि**
(ΔY)	(ΔC)
(I)	(II)
1000	1000 (0.8)
1000 (0.8)	$1000\ (0.8)^2$
$1000\ (0.8)^2$	$1000\ (0.8)^3$
$1000\ (0.8)^3$	$1000\ (0.8)^4$

$\Sigma\Delta Y = 1000 + 1000(0.8)+1000(0.8)^2.....$ $\Sigma\Delta C = 1000(0.8)+1000(0.8)^2+1000(0.8)^3.....$

$= 1000\ [1+0.8+(0.8)^2.....]$ $= 1000(0.8)\ [1+0.8+(0.8)^2.....]$

$= 1000\ (1000 \times \frac{1}{1-0.8})$ $1000 \times \frac{4}{5} \times \frac{1}{1-\frac{4}{5}}$

$= 1000 \times \frac{1}{0.2}$ $1000 \times \frac{4}{5} \times \frac{1}{\frac{1}{5}}$

$= 5000$ रु. $1000 \times \frac{5}{1} \times \frac{5}{1}$

$= 4000$ रु.

इस तालिका में पहले कालम में आय में विभिन्न चरणों में होने वाली वृद्धि दिखाई गई है। निवेश व्यय में 1000 रु. की वृद्धि से आय में 1000 रु. की वृद्धि होती है। दूसरे कालम में उपभोग व्यय में विभिन्न चरणों में होने वाली वृद्धि दिखाई गई है। आय में 1000 रु. की वृद्धि से उपभोग व्यय में 1000 x 0.8 वृद्धि होती है

क्योंकि सी.उ.प्र. 0.8 है। उपभोग व्यय में जितनी वृद्धि हुई अगले चरण में आय में उतनी ही वृद्धि होती है। इस प्रकार यदि आय में विभिन्न चरणों में होने वाली वृद्धि को लिख लें तो यह एक श्रृंखला बन जाती है। इस श्रृंखला का योग गणित एक विधि द्वारा निकाला जा सकता है। इसका योग निकालने का सूत्र है : $\frac{1}{1-\frac{1}{r}}$

जिसमें r श्रृंखला का सार्ख अनुपात (common ratio) है। इस श्रृंखला में सार्ख अनुपात 0.8 है जो कि सी.उ.प्र. है। अतः निवेश में 1000 रु. के परिवर्त्तन से आय में कुल परिवर्त्तन = $1000 \times \frac{1}{1-0.8} = 1000 \times \frac{1}{0.2} = 5000$ रु.।

क्योंकि 1 – सी.उ.प्र. = सी.ब.प्र. जो इस उदाहरण में 0.2 है तो :

$$\text{आय में कुल परिवर्त्तन} = 1000 \times \frac{1}{\text{सी.ब.प्र.}}$$

$$= 1000 \times \frac{1}{0.2}$$

= 5000 रू.

इस प्रकार निवेश में 1000 रु. की वृद्धि से आय में इसका 5 गुना वृद्धि हुई। 5 गुणक का मूल्य है।

$$\text{गुणक} = \frac{\Delta Y}{\Delta I} = \frac{5000}{1000} = 5$$

$$= \frac{1}{1-\frac{1}{\text{सी.उ.प्र.}}}$$

गुणक का आकार सी.उ.प्र. के मूल्य पर निर्भर करता है क्योंकि गुणक

जितनी अधिक सी.उ.प्र. होगी उतना ही अधिक गुणक का मूल्य होगा।

$$\text{एक अन्य रूप में गुणक} = \frac{1}{\text{सी.ब.प्र.}}$$

जितनी अधिक सी.ब.प्र. होगी उतना ही कम गुणक का मूल्य होगा।

आधिक्य माँग और अभावी माँग की समस्याएँ और उन्हें ठीक करने के उपाय

अब तक के अध्ययन से यह स्पष्ट है कि अर्थव्यवस्था में उत्पादन, आय व रोजगार के स्तर का निर्धारण केवल समग्र माँग के स्तर द्वारा होता है। यदि समग्र माँग पूर्ण रोजगार के उत्पादन स्तर के बराबर है तो अर्थव्यवस्था में न केवल संतुलन की स्थिति होगी बल्कि पूर्ण रोजगार की स्थिति भी होगी। इसे पूर्ण रोजगार संतुलन की स्थिति कहते हैं। यदि समग्र माँग पूर्ण रोजगार के उत्पादन स्तर से कम है तो यह अभावी माँग की स्थिति होगी। इस अवस्था में अर्थव्यवस्था में ना तो पूर्ण रोजगार और ना ही संतुलन की स्थिति है। यदि समग्र माँग पूर्ण रोजगार के उत्पादन से अधिक है तो यह माँग आधिक्य की स्थिति होगी। इससे कीमतें बढ़ने लगेंगी।

अब हम विस्तार से एक एक करके इन समस्याओं पर विचार करेंगे।

अभावी माँग की समस्या

यदि अर्थव्यवस्था में समग्र माँग पूर्ण रोजगार स्तर की समग्र पूर्ति से कम है तो अर्थव्यवस्था में अभावी माँग की स्थिति है। अभावी माँग के कारण अवस्फीति अन्तराल की स्थिति उत्पन्न होती है। इसके कारण अर्थव्यवस्था में आय, उत्पादन और रोजगार का स्तर घटने लगता है और अर्थव्यवस्था अल्प रोजगार संतुलन (under employment equilibrium)की स्थिति में पहुँच जाती है। रेखाचित्र 7 में अभावी माँग की स्थिति दर्शायी गयी है।

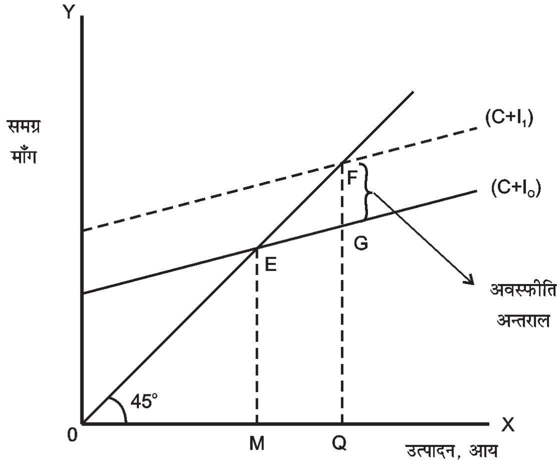

रेखाचित्र 7 – अभावी माँग, अवस्फीति अन्तराल

OY अक्ष पर समग्र माँग दर्शायी गई है। OX अक्ष पर आय व उत्पादन का स्तर दर्शाया गया है। पूर्ण रोजगार के स्तर पर आय व उत्पादन OQ है। अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार संतुलन के लिये समग्र माँग भी इतनी ही होनी चाहिये। रेखाचित्र में यह माँग FQ है क्योंकि FQ = OQ। यह तब संभव है जब अर्थव्यवस्था में समग्र माँग वक्र $(C+I_1)$ हो। यदि समग्र माँग वक्र $(C+I_0)$ है तो OQ उत्पादन स्तर पर समग्र माँग केवल GQ है। अतः समग्र माँग पूर्ण रोजगार स्तर पर समग्र पूर्ति से कम है क्योंकि समग्र माँग GQ है और समग्र पूर्ति FQ या OQ है। दोनों का अन्तर FG है। यह अन्तर (FG) अवस्फीति अन्तराल है। अर्थव्यवस्था असंतुलन की स्थिति में है। इस अवस्फीति अन्तराल के कारण अर्थव्यवस्था में परिवर्त्तन होने शुरू होंगे।

समग्र पूर्ति के समग्र मांग से अधिक होने के कारण स्टाक में अप्रत्याशित व अनियोजित वृद्धि हो जाएगी। इसके फलस्वरूप फर्म रोजगार व उत्पादन के स्तर को कम कर देंगी यानि समग्र पूर्ति घट जाएगी। ये परिवर्त्तन तब तक होते रहेंगे जब तक समग्र पूर्ति घटकर समग्र माँग के बराबर ना हो जाए। जब ये दोनों बराबर हो जाएँगे तो अर्थव्यवस्था संतुलन की स्थिति में आ जाएगी। लेकिन यह संतुलन अल्प रोजगार की स्थिति में है। इसे अल्प रोजगार संतुलन की स्थिति कहते हैं। OM उत्पादन स्तर पर अर्थव्यवस्था अल्परोजगार संतुलन की स्थिति में हैं। $(C+I_0)$ समग्र माँग वक्र है। इस प्रकार अभावी माँग की स्थिति से अवस्फीति अन्त. राल उत्पन्न होता है जो अर्थव्यवस्था को अल्प रोजगार संतुलन की स्थिति में धकेल देता है।

आधिक्य माँग की समस्या

यदि अर्थव्यवस्था में समग्र माँग पूर्ण रोजगार के स्तर पर समग्र पूर्ति से अधिक है तो यह आधिक्य माँग की स्थिति है। आधिक्य माँग से स्फीति अन्तराल उत्पन्न होता है जिससे मुद्रा स्फीति की स्थिति उत्पन्न होती है अर्थात् कीमतें बढ़ने लगती हैं। रेखाचित्र 8 में आधिक्य माँग की स्थिति दर्शायी गयी है।

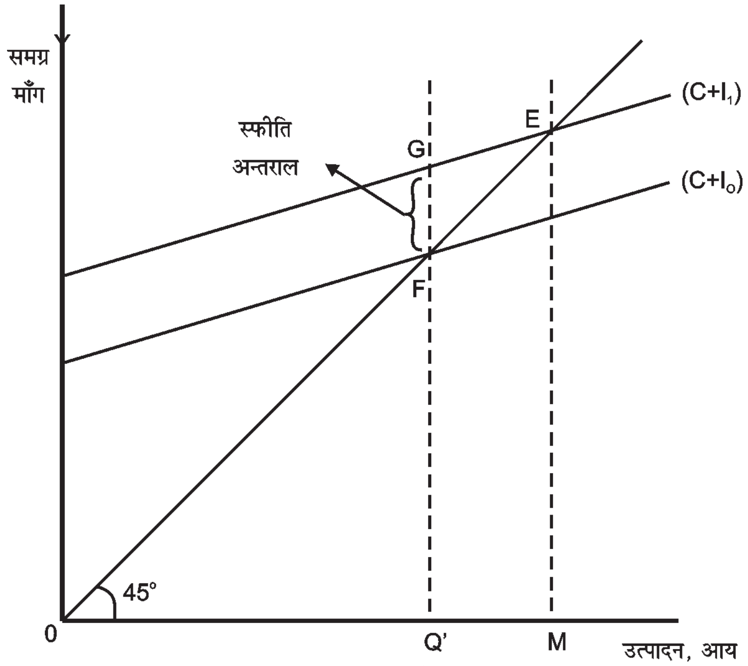

रेखाचित्र 8 – अधिक्य माँग, स्फीति अन्तराल

OX अक्ष पर उत्पादन व आय के स्तर को मापते हैं। OY अक्ष पर उत्पादन व आय के स्तर को मापते हैं। OY अक्ष पर समग्र माँग (C+I) मापते हैं। OQ पूर्ण रोजगार का उत्पादन व आय स्तर हैं। यदि अर्थव्यवस्था में समग्र माँग वक्र (C+I$_O$) है तो समग्र माँग पूर्ण रोजगार के स्तर की समग्र पूर्ति के बराबर है। समग्र माँग OQ उत्पादन व आय के स्तर पर FQ है और समग्र पूर्ति OQ। OQ और FQ दोनों बराबर हैं क्योंकि F बिन्दु 45° रेखा पर है। अतः अर्थव्यवस्था पूर्ण रोजगार संतुलन की स्थिति में होगी।

यदि अर्थव्यवस्था में समग्र माँग वक्र (C+I$_1$) है तो पूर्ण रोजगार के उत्पादन स्तर (OQ) पर समग्र माँग GQ है क्योंकि G बिन्दु (C+I$_1$) समग्र माँग वक्र पर है। और GQ, OQ से अधिक है। दोनों का अन्तर GF है। अतः अर्थव्यवस्था में आधिक्य माँग की स्थिति है और GF स्फीति अन्तराल है। पूर्ण रोजगार पर समग्र पूर्ति पर समग्र माँग का आधिक्य स्फीति अन्तराल कहलाता है। इस अन्तराल के कारण कीमतें बढ़ती हैं। कीमतों के बढ़ने से OQ उत्पादन का मौद्रिक मूल्य बढ़ जाएगा और ये बढ़कर OM हो जाएगा। OM, OQ उत्पादन का ही बढ़ी हुई कीमतों पर मौद्रिक मूल्य है। ये वृद्धि केवल मौद्रिक है, वास्तविक नहीं। मौद्रिक मूल्य OM होने पर समग्र माँग और समग्र पूर्ति (मौद्रिक) दोनों EM के बराबर है अतः अर्थव्यवस्था संतुलन की स्थिति में है लेकिन मुद्रा स्फीति की समस्या उत्पन्न हो गई।

आय व रोजगार निर्धारण का अध्ययन अभी तक केवल दो क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था के संदर्भ में किया गया है। अभावी माँग और आधिक्य माँग की समस्याओं को दूर करने के दो उपाय पाठ्यक्रम का भाग है।

इनमें से एक उपाय सरकारी व्यय में परिवर्त्तन है। अत: अब हम इस अध्ययन में सरकारी क्षेत्र को एक सरल रूप में शामिल कर रहे हैं।

तीन क्षेत्रीय (परिवार, फर्म व सरकार) अर्थव्यवस्था में समग्र माँग उपभोग व्यय, निवेश व्यय और सरकारी व्यय का योग होती है। सरकारी व्यय को समग्र माँग के घटक के रूप में शामिल करने पर समग्र माँग वक्र उत्पादन के विभिन्न स्तर पर (C+I+G) को दर्शाती है जैसा कि रेखाचित्र 9 में दिखाया गया है।

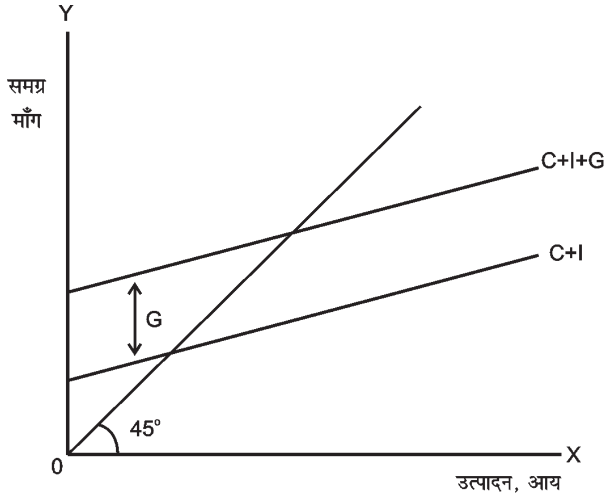

रेखाचित्र 9 – सरकारी व्यय का समग्र माँग पर प्रभाव

हमने निवेश व्यय की भाँति सरकारी व्यय को भी स्वायत्त मान लिया है अर्थात् सरकारी व्यय उत्पादन के स्तर से प्रभावित नहीं होता। रेखाचित्र में (C+I) वक्र दो क्षेत्रों के संदर्भ में समग्र माँग है। (C+I+G) वक्र उत्पादन के विभिन्न स्तर पर तीन क्षेत्रों की समग्र माँग दर्शाती है। (C+I+G) वक्र (C+I) वक्र के ऊपर है और समानान्तर है क्योंकि इन दोनों में अन्तर (G) सरकारी व्यय के बराबर है जिसे हमने स्थिर माना है (जो उत्पादन के स्तर के साथ परिवर्त्तित नहीं होता)।

रेखाचित्र 10 में तीन क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में अभावी माँग की स्थिति और उससे उत्पन्न होने वाले अवस्फीति अन्तराल को दर्शाया गया है। इसी प्रकार हम तीन क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में आधिक्य माँग की स्थिति व उससे उत्पन्न होने वाले स्फीति अन्तराल को रेखाचित्र द्वारा दर्शा सकते हैं। तीन क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था के संदर्भ में समग्र माँग वक्र (C+I+G) होगी ना कि (C+I)!

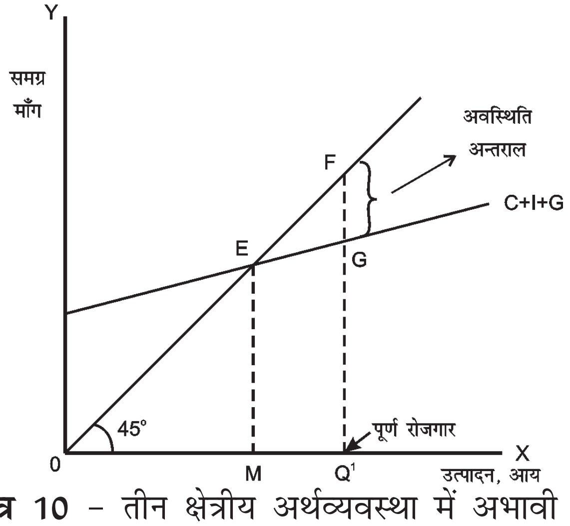

रेखाचित्र 10 – तीन क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में अभावी माँग

अभावी माँग की समस्या को दूर करने के उपाय:

अभावी माँग की समस्या को हल करने के केवल दो उपायों पर विचार किया जाएगा।

(i) सरकारी व्यय में वृद्धि

रेखाचित्र 11 में OQ पूर्ण रोजगार पर उत्पादन व आय स्तर हैं। अर्थव्यवस्था में समस्त माँग वक्र (C+I+Go) है। OQ उत्पादन स्तर पर समग्र माँग GQ है जो पूर्ण रोजगार पर समग्र पूर्ति (FQ=OQ) से FG कम है। FG अवस्फीति अन्तराल है। यदि सरकारी व्यय में FG वृद्धि कर दी जाए तो नई समग्र माँग वक्र (C+I+G_1) हो जाएगी।

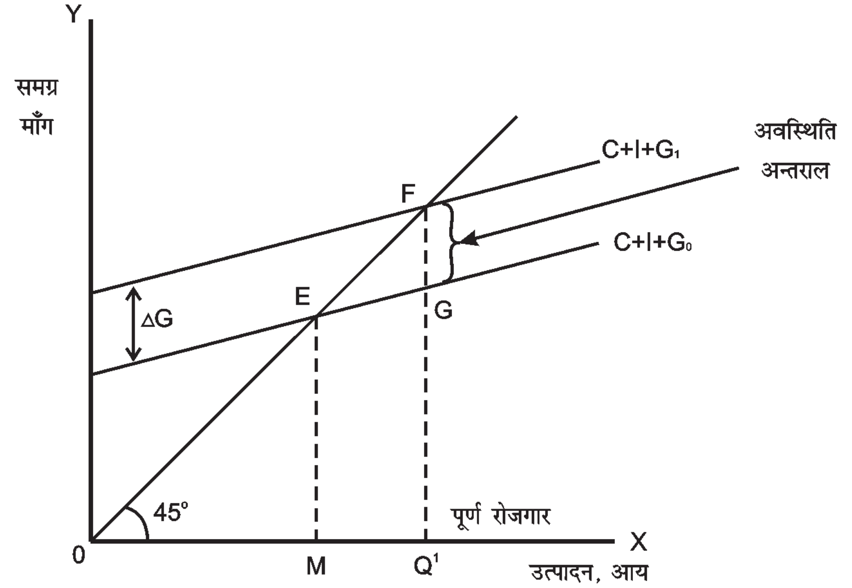

रेखाचित्र 11 – सरकारी व्यय में वृद्धि से अभावी माँग की समस्या का हल

यह नई समग्र माँग वक्र दर्शाती है कि पूर्ण रोजगार के उत्पादन स्तर (OQ) या (FQ) पर समग्र माँग भी FQ है। अतः अर्थव्यवस्था पूर्ण रोजगार संतुलन की स्थिति में है

अभावी माँग की स्थिति समाप्त हो गई व अवस्फीति अन्तराल भी समाप्त हो गया।

इस प्रकार सरकारी व्यय में वृद्धि करके अभावी माँग की समस्या को समाप्त किया जा सकता है।

(ii) फर्मों द्वारा निवेश के लिए बैंकों से लिए जाने वाले ऋण में वृद्धि

यदि फर्में बैंकों से निवेश के लिए अधिक ऋण लें तो निवेश व्यय बढ़ जाएगा जिससे समग्र माँग बढ़ जाएगी। इसके लिए साख (ऋण) की उपलब्धता को बढ़ाया जाता है। यह कार्य सुरक्षित निधि अनुपात को कम करके किया जाता है। सुरक्षित निधि अनुपात कम करने से बैंकों की ऋण देने की क्षमता बढ़ जाती है। बैंक दर को कम करके ब्याज दर को घटाया जा सकता है। ब्याज दर कम होने से फर्में अधिक ऋण लेने के लिए प्रोत्साहित होंगी। खुले बाजार के कार्यकलापों द्वारा मुद्रा की पूर्ति को बढ़ाया जा सकता है। इससे ऋण की

उपलब्धता बढ़ती है। जब फर्में निवेश के लिए ऋण लेती हैं तो समग्र माँग बढ़ जाती है और अभावी माँग की समस्या का समाधान हो जाता है।

आधिक्य माँग की समस्या को दूर करने के उपाय

जब समग्र माँग पूर्ण रोजगार के स्तर पर समग्र पूर्ति से अधिक होती है तो आधिक्य माँग की स्थिति होती है। आधिक्य माँग के माप को स्फीति अन्तराल कहते हैं। यदि समग्र माँग में स्फीति अन्तराल जितनी कमी कर दी जाए तो इस समस्या का समाधान हो जाएगा। समग्र माँग दो तरीकों से कम कर सकते हैं।

(i) सरकारी व्यय में कमी द्वारा

यदि सरकारी व्यय में कमी कर दी जाए तो समग्र माँग कम हो जाएगी। (C+I+G) वक्र नीचे की ओर खिसक जाएगी। सरकारी व्यय में कमी स्फीति अन्तराल के बराबर होनी चाहिए ताकि पूर्ण रोजगार के स्तर पर समग्र पूर्ति और समग्र मांग बराबर हो जाए।

(ii) फर्मों द्वारा किए गए निवेश व्यय में कमी द्वारा

केन्द्रीय बैंक सुरक्षित निधि अनुपात को बढ़ाकर, बैंक दर को बढ़ाकर तथा खुले बाजार के कार्यकलापों द्वारा फर्मों द्वारा किए जाने वाले निवेश को प्रतिकूल रूप में प्रभावित कर सकता है। (इन विधियों के बारे में विस्तार से चर्चा अगली इकाई में की गई है) निवेश व्यय कम होने से समग्र मांग कम हो जाएगी और इससे आधिक्य मांग की समस्या का समाधान हो जाएगा।

इकाई 9

पूँजीगत प्राप्तियां और राजस्व प्राप्तियाँ

जिन प्राप्तियों से या तो कोई दायित्व उत्पन्न होता है (जैसे कि ऋण लेना) या परिसम्पत्ति कम होती है (जैसे कि सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों का विनिवेश) उन्हें **पूँजीगत प्राप्तियाँ** कहते हैं। जिन प्राप्तियों से ना तो कोई दायित्व उत्पन्न होता है और ना ही परिसम्पति कम होती है उन्हें **राजस्व प्राप्तियाँ** कहते हैं! करों से प्राप्तियाँ राजस्व प्राप्तियाँ है।

पूँजीगत व्यय और राजस्व व्यय

वे व्यय जिनसे या तो परिसम्पत्ति का निर्माण हो (जैसे विद्यालय के भवन का निर्माण) या दायित्व कम हो (जैसे ऋण की अदायगी) **पूँजीगत व्यय** कहलाते हैं

ऐसे व्यय, जिनसे ना तो परिसम्पत्ति का निर्माण हो और ना ही दायित्व कम हो, **राजस्व व्यय** कहलाते हैं। (जैसे कि ब्याज का भुगतान, आर्थिक सहायता, राज्यों को दिए गए अनुदान)

राजकोषीय घाटे के परिणाम

राजकोषीय घाटे का परिमाण यह दर्शाता है कि सरकार को अपने खर्चे पूरे करने के लिए कितना ऋण लेना पड़ा। अधिक राजकोषीय घाटे का अर्थ है सरकार द्वारा अधिक ऋण लेना। ऋणों से ब्याज के भुगतान और ऋणों की अदायगी का भार पड़ता है जिसके परिणामस्वरूप भविष्य में राजकोषीय घाटा बढ़ सकता है। अधिक राजकोषीय घाटा स्फीतिकारक भी हो सकता है।